04 - अपने हिस्से की जिंदगी

05 -भारतीय कला, संस्कृति एवं कथा चित्रण

06 - गुरु पं. हरि प्रसाद चौरसिया की प्रतिछाया हैं विवेक सोनार

07 - फिल्मों के डराने वाले मनहूस टाइटल

A Daily News Magazine

इंदौर

रविवार, 12 अप्रैल, 2026

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 189, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

रणकपुर का रहस्यमय जिनालय

इस मन्दिर का निर्माण धरणा शाह (सादड़ी मेवाड़ के साहूकार) ने महाराणा कुम्भा के शासनकाल (1433 से 68 ई.) में करवाया था। यह मंदिर पश्चिम भारत के शिल्पकारों और सूत्रधार परिवारों के लिए पिछले 500 सालों से प्रशिक्षण केंद्र भी रहा है। रणकपुर मंदिर अभी तक सुरक्षित है क्योंकि निर्माताओं के वंशज अभी तक इससे जुड़े हैं। वे अपने पूर्वजों की थाती को नष्ट नहीं करते बल्कि अनुरक्षित और सुरक्षित करते हैं। शिल्प को यथारूप रखने पर ध्यान देते हैं और इसके लिए मूल शिल्पकारों को जोड़े रखते हैं।

फोटो: पंकज शर्मा

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

शब्द रह गये हैं पीछे

थोड़ा थक गये हैं शायद चलते-चलते
जबकि आगे-आगे गर्वोन्नत चल रहे हैं वे
बम-बारूद,तोप-टैंक और गुस्सैल सैनिक
दफ़ा हुईं फूलों की,सपनों की कहानियाँ
व्यर्थ हुआ नदियों,झरनों का बहना
रात,चाँदनी,अकेली लड़की भटकती हुई
सूने में चमकती है थानेदार की मोटरगाड़ी
तलाश सूर्योदय,संत-वाणी,प्रेम और दुःख
एक बेहद लंबी सुरँग से गुज़रता हूँ मैं
कुछ नहीं और,कुछ नहीं और,है नहीं? वहाँ
सिर्फ़ कुछ मसख़रे समझा रहे हैं गणित
कम को अधिक में से घटा दो प्यारे मियाँ
ख़ारिज़ कर दो भाषा,विचार और संवाद
निकाल बाहर करो तमाम पुस्तकालय
दाना-पानी तमाम दबा दो जल्द से जल्द
गोदामों-तिज़ोरियों में,कृपा-नीतियों में
संगीत-सभाओं में खोल दो कुक्कुट-केंद्र
सच ही कहा गया है,लेकिन शब्दों में ही
व्याकरण के समीकरण में कीचड़ है जहाँ
क्यों नहीं हर हाल कवि हाज़िर है वहाँ
सफ़ाई-कामगार का दूसरा नाम है कवि
जो अकारण ही खुद अपनी पीठ पर
लाद लिए चलता है ज़मानेभर का बोझ
सर्वथा अकेला ही होता है वह हर कहीं
मगर बहुविध,बहुतेरे फिर मचाता है शोर
अकेले-अकेले ही फ़ाड़ देना चाहता है
दुनिया का बेहूदा-बदरँग वह मानचित्र
जिसमें खूनी-लकीरों से खींची हैं सीमा?
उड़ते पक्षी जानते नहीं हैं कि घर कहाँ
प्रार्थना? जानती हैं पता भूखे बच्चों का
भौंकते-भौंकते थक गये हैं कुत्ते तमाम
बोलते-बोलते हार गये हैं वाचाल सभी
चलते-चलते ठहर गये हैं चक्र चक्रवर्ती
पहनकर हेलमेट आगे हैं भाषा-वैज्ञानिक
शांति-वार्ताओं की उड़ाते हुए धज्जियाँ
शब्द रह गये हैं पीछे।

– राजकुमार कुम्भज

इस चुनाव में

बदलाव को तैयार है बंगाल

● मुर्शिदाबाद में पीएम मोदी ने टीएमसी पर बोला जोरदार हमला

कहा- बंगाल की जनता टीएमसी का अहंकार करेगी चकनाचूर

कोलकाता (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को पश्चिम बंगाल के पूर्व वर्धमान जिले के कटवा और मुर्शिदाबाद के जंगीपुर में चुनावी रैलियों को संबोधित किया। पीएम ने पूर्व वर्धमान में कहा- बंगाल बदलाव के लिए तैयार है। मोदी की गारंटी टीएमसी की निर्मम सरकार के भय राज को हटाके भरोसे में बदलने की है। मुर्शिदाबाद में मोदी ने कहा- आजादी के बाद से, बंगाल को चुनौती देने की हिम्मत करने वाले हर व्यक्ति का अहंकार चकनाचूर हो गया है। पहले अंग्रेजों का, फिर कांग्रेस का, और अंत में वामपंथियों का अहंकार भी चकनाचूर हो गया।

अब बंगाल की जनता टीएमसी के अहंकार को चकनाचूर कर देगी। पीएम मोदी ने कहा- आजादी के बाद से, बंगाल को चुनौती देने की हिम्मत करने वाले हर व्यक्ति का अहंकार चकनाचूर हो गया है। पहले अंग्रेजों का, फिर कांग्रेस का, और अंत में वामपंथियों का अहंकार चकनाचूर हो गया। अब बंगाल की जनता टीएमसी के अहंकार को चकनाचूर कर देगी। मोदी ने कहा- बंगाल की जनता ने मां, माटी और मानुष के नारे से प्रेरित होकर, बहुत आशा की थी।

बंगाल में कमीशन-भ्रष्टाचार की व्यवस्था खत्म करेंगे

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि बीजेपी सरकार बनने पर राज्य में 'कट मनी', कमीशन और भ्रष्टाचार की व्यवस्था खत्म कर दी जाएगी। राज्य में रोजगार के नए अवसर पैदा किए जाएंगे, जिससे युवाओं को फायदा मिलेगा। उन्होंने यह भी कहा कि बीजेपी के घोषणा पत्र के अनुसार, सरकार बनने के 45 दिनों के भीतर सरकारी कर्मचारियों को सातवें वेतन आयोग का लाभ दिया जाएगा। **यह चुनाव बंगाल की पहचान बचाने का चुनाव है**– प्रधानमंत्री मोदी बंगाल के जंगीपुर में आज की दूसरी जनसभा को संबोधित कर रहे हैं। उन्होंने कहा– बंगाल में टीएमसी मां, माटी और मानुष का नारा लगाकर सरकार में आई लेकिन अब राज्य में घुसपैठिओं की सरकार बनाना चाहती है। बंगाल के लोगों ने टीएमसी को घुसपैठियों की सरकार बनने नहीं देना है। ये चुनाव सिर्फ सत्ता परिवर्तन का चुनाव नहीं है।

आशा भोसले को हार्ट अटैक आया

ब्रीच कैंडी हॉस्पिटल में भर्ती

मुंबई (एजेंसी)। बॉलीवुड की दिग्गज सिंगर आशा भोसले को शनिवार को हार्ट अटैक

आया। उन्हें मुंबई के ब्रीच कैंडी हॉस्पिटल के आईसीयू में भर्ती कराया गया, जहां उनका इलाज जारी है। फिलहाल डॉक्टरों की टीम उनकी निगरानी कर रही है, लेकिन उनकी हालत को लेकर अस्पताल या परिवार की ओर से कोई आधिकारिक बयान जारी नहीं किया गया है। आशा भोसले ने 8 सितंबर 2025 को अपना 92वां जन्मदिन मनाया था। हालांकि मीडिया से बातचीत में आशा भोसले की बहन उषा मंगेशकर ने कहा कि अभी उन्हें इस बारे में कुछ पता नहीं है।

वृंदावन हादसा में अब तक 11 श्रद्धालुओं की गई जान

● 4 लोग अब भी लापता, 250 गोताखोर रेस्क्यू में जुट ● यमुना से बेटे की लाश निकली तो बुजुर्ग पिता रो पड़ा

मथुरा (एजेंसी)। मथुरा के वृंदावन में नाव हादसे में 11 श्रद्धालुओं की मौत हो चुकी है। अब तक 22 लोगों को रेस्क्यू किया गया है। अभी 4 लोग लापता हैं। शनिवार को दूसरे दिन भी रेस्क्यू ऑपरेशन चल रहा है। आर्मी समेत 250 लोगों की टीम रेस्क्यू ऑपरेशन में लगी हुई है। 14 किमी के दायरे में लापता लोगों की तलाश की जा रही है। एक शव देवरहा बाबा घाट के पास से बरामद किया गया। बेटे की लाश देखकर बुजुर्ग पिता रो पड़े। परिवार वालों ने उन्हें ढांढस बंधाया। बाकी लापता अब तक क्यों नहीं मिल पाए। इस सवाल पर रेस्क्यू में जुटे अफसर ने बताया कि यमुना का बहाव तेज है, इसलिए लोग बहकर दूर जा सकते हैं। नदी में गाद (कीचड़) और रेत में शव दबे हो सकते हैं।

मुख्यमंत्री आज लाड़ली बहनों के खातों में राशि करेंगे अंतरित

सीहोर में 184 करोड़ से अधिक के विकास एवं निर्माण कार्यों का करेंगे लोकार्पण एवं भूमि-पूजन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 12 अप्रैल को सीहोर जिले के आष्टा में आयोजित कार्यक्रम में प्रदेश की एक करोड़ 25 लाख से अधिक लाड़ली बहनों के खाते में 1836 करोड़ रूपये से अधिक की राशि अंतरित करेंगे। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. यादव 184 करोड़ 92 लाख रूपये की लागत के विकास एवं निर्माण कार्यों का लोकार्पण एवं भूमि-पूजन भी करेंगे। इन कार्यों में 115 करोड़ 32 लाख रूपये के कार्यों का लोकार्पण एवं 69 करोड़ 60 लाख रूपये के कार्यों का भूमि-पूजन शामिल है।

किसान देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़, किसानों के विकास के लिए हम हैं प्रतिबद्ध : राजनाथ सिंह

● किसानों के श्रम से देश का खाद्यान्न निर्यात हुआ दोगुना : मोहन यादव ● किसानों के लिए पाठशाला की तरह है उन्नत कृषि महोत्सव : शिवराज

भोपाल (नप्र)। केन्द्रीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने कहा है कि देश की सीमा पर जवान और खेतों में किसान दोनों का समान महत्व है। दोनों ही अपनी मिट्टी के प्राण-प्रण से सेवा में तत्पर रहते हैं। किसान हमारे देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, हमारी ताकत हैं। इनके बिना हमारे भोजन की थाली अधूरी है। किसानों की मुस्कान ही हमारी पूंजी है। उन्होंने कहा कि खेती-किसानी बड़े जोखिम का काम है, फिर भी हमारे किसान पूरी मेहनत और लगन से देशवासियों का उदर-पोषण करते हैं। रक्षा मंत्री ने कहा कि वे स्वयं एक किसान पुत्र हैं। किसानों की वेदना और उनकी जरूरतों से वाकिफ हैं। किसानों का कल्याण हमारा लक्ष्य है। इनकी बेहतरी के लिए हम संकल्पबद्ध होकर प्रयास कर रहे हैं।

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि देश के किसानों के कल्याण की दिशा में हमारा मजबूत प्रयास है। किसान सम्मान निधि के रूप में हर पात्र किसान के बैंक खाते में 6000 रुपए सीधे ट्रांसफर किये जा रहे हैं, जिससे वे खाद, बीज और खेती-किसानी के अन्य जरूरी समान खरीद सकें। यह किसानों की मेहनत का सम्मान है। अब तक हमारी सरकार हजारों करोड़ रुपए की सहायता किसान भाइयों को दे चुकी है। उन्होंने किसानों के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता दोहराते हुए कहा कि गांव, गरीब, नारी, युवा और खेती-किसानी की लगातार बेहतरी के लिए हमारे प्रयास आगे भी इसी तरह जारी रहेंगे। केन्द्रीय रक्षा मंत्री श्री सिंह शनिवार को रायसेन के दशहरा मैदान में आयोजित उन्नत कृषि महोत्सव-2026 को संबोधित कर रहे थे।

केन्द्रीय रक्षा मंत्री श्री सिंह, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा त्रि-दिवसीय कृषि महोत्सव प्रदर्शनी एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलित कर विधिवत् शुभारंभ किया गया।

किसानों के विकास का चल रहा है महायज्ञ : केन्द्रीय कृषि मंत्री सिंह

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने इस अवसर पर कहा कि केन्द्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह पूर्व में देश के कृषि मंत्री भी रहे हैं। वे स्वयं एक किसान हैं। आज रायसेन की पवित्र धरा पर ज्ञान, विज्ञान, अनुसंधान और कृषि का संगम हो रहा है। यह किसानों के लिए एक पाठशाला की तरह है, जहां किसानों को कृषि की नवीन तकनीकें सीखने का अवसर मिलेगा। रायसेन जिला कृषि सहित हर क्षेत्र में आगे हैं, यहां की धान और गेहूं दुनियाभर में प्रसिद्ध है। रायसेन में 2 विश्व धरोहर सांची और भीमबैठिका हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में हमें शक्तिशाली विकसित भारत बनाना है। देश को मजबूत इरादों वाले प्रधानमंत्री और रक्षामंत्री मिले हैं।

मध्यप्रदेश के लिए शुभंकर हैं केन्द्रीय मंत्री राजनाथ सिंह : डॉ. यादव

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि केन्द्रीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह के हाथों कुछ दिन पहले ही मध्यप्रदेश में बीईएमएल के पहले रेल कारखाने का भूमि-पूजन हुआ है और आज वे किसानों को अपना मार्गदर्शन देने आए हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि श्री राजनाथ सिंह मध्यप्रदेश के लिए शुभंकर केन्द्रीय मंत्री हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में दुनिया में भारत की अलग छवि बन रही है। केंद्रीय कृषि मंत्री श्री चौहान देश में कृषि क्षेत्र की सफलता की पहचान बन चुके हैं। खेत के श्रमवीर किसानों और सीमा पर शूरवीर जवानों के सम्मान में केन्द्रीय रक्षा मंत्री की उपस्थिति में उन्नत कृषि महोत्सव का यह आयोजन इन दोनों की गरिमा को बढ़ाने वाला है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 25 °c
न्यूनतम 22°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 12 अप्रैल 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

महिला आरक्षण कानून को राजनीतिक हथियार न बनाएं

● थरूर बोले-बिल के साथ परिसीमन प्रक्रिया में जल्दबाजी ठीक नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस नेता शशि थरूर ने कहा कि महिला आरक्षण कानून में होने वाले संशोधन को राजनीतिक हथियार की तरह इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए। ताकि संघवाद कमजोर न हो और संसद की गरिमा को ठेस न पहुंचे।

संसद में 16 अप्रैल से होने वाले विशेष सत्र से पहले थरूर ने आरोप लगाया कि सरकार 3 दिन के सत्र का इस्तेमाल राज्य चुनावों से पहले राजनीतिक लाभ लेने और 2029 लोकसभा चुनाव से पहले परिसीमन की तैयारी के लिए कर रही है। थरूर ने एक्स पर लिखा कि कांग्रेस हमेशा से महिलाओं के लिए 33 फीसदी आरक्षण की समर्थक रही है। 2013 में कांग्रेस ने ही यह बिल पेश कर राज्यसभा से पास कराया था, लेकिन मौजूदा सरकार का रवैया चिंताजनक है। इससे पहले शुक्रवार को कांग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक में इस मुद्दे पर चर्चा हुई थी। इसमें सरकार के प्रस्तावित संशोधनों पर आपत्ति जताई गई।

दक्षिण के राज्यों का मुद्दा क्यों उठाया

2023 के कानून में साफ लिखा है कि महिला आरक्षण जनगणना और परिसीमन के बाद ही लागू होगा। परिसीमन यानी जनसंख्या के आधार पर लोकसभा और विधानसभा सीटों की संख्या और सीमाएं तय करना। जनगणना के आंकड़ों के आधार पर एक आयोग सीटों का बंटवारा तय करता है। आखिरी बार परिसीमन 2002-2008 के बीच हुआ था, जो 1971 की जनगणना के आधार पर था। इससे दक्षिण भारत की सीटें कम हो सकती हैं।

मणिपुर में बंगाल के बीएसएफ जवान की गोली मारकर हत्या

● उखरुल में पेट्रोलिंग ड्यूटी पर तैनात थे,यहां फरवरी से हिंसा जारी है

इंफाल (एजेंसी)। मणिपुर के उखरुल जिले में शुक्रवार को पेट्रोलिंग ड्यूटी पर तैनात बॉर्डर सिक्योरिटी फोर्स के एक कांस्टेबल की गोली मारकर हत्या कर दी गई। अधिकारियों के मुताबिक कांस्टेबल मिथुन मंडल को शाम करीब 4.30 बजे गोली लगी। गोली लगने के बाद उन्हें तुरंत इंफाल के अस्पताल ले जाया गया, जहां शाम करीब 6 बजे उन्होंने दम तोड़ दिया। अधिकारियों ने बताया कि मिथुन मंडल पश्चिम बंगाल के भगजन टोला गांव के रहने वाले थे और 170 बटालियन बीएसएफ में तैनात थे। फरवरी में दो समुदायों के बीच हुई जातीय झड़पों के बाद कुकी गांव मोंगकोट चेपू और पड़ोसी तांगखुल नागा इलाके में गोलीबारी की घटनाएं होती रही हैं। यहां जारी तनाव के बीच पेट्रोलिंग कर रहे बीएसएफ जवान पर यह हमला हुआ है। मणिपुर पुलिस ने बयान जारी कर कहा कि हमले के पीछे शामिल लोगों को पकड़ने के लिए सुरक्षा बल इलाके में सर्च ऑपरेशन और तलाशी अभियान चला रहे हैं। फिलहाल हमलावरों की पहचान सार्वजनिक नहीं की गई है। मुख्यमंत्री वाई खेमचंद सिंह ने कहा- कांस्टेबल मिथुन मंडल की दुखद शहादत की कड़ी निंदा करता हूं। इस बलिदान को कभी नहीं भुलाया जाएगा।

शराब के नशे में हुए झगड़े के बाद हिंसा शुरू हुई- हिंसा की शुरुआत 7 फरवरी को शाम उखरुल जिले के लितान सरेइखोंग में शराब के नशे में हुए झगड़े से हुई थी, जिसमें तांगखुल नागा समुदाय के स्टर्लिंग नाम के व्यक्ति के साथ मारपीट हुई थी। इसके बाद उपद्रवियों ने उखरुल जिले के लितान सरेइखोंग गांव में 25 घर जला दिए।

अमरनाथ की तरह लागू होगा रेडियो फ्रीक्वेंसी सिस्टम,आपदा रेस्क्यू होगा आसान

चारधाम यात्रा में अब हर पल ट्रैक होगी यात्रियों की लोकेशन

देहरादून (एजेंसी)। चारधाम यात्रा में अब श्रद्धालुओं की हर गतिविधि पर डिजिटल निगरानी रखने की तैयारी है। अमरनाथ यात्रा की तरह रेडियो फ्रीक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन सिस्टम लागू करने का सुझाव दिया गया है, जिससे प्रशासन को हर समय यह पता रहेगा कि कौन यात्री कहां है और किस रूट पर कितनी भीड़ है। इससे आपदा और भीड़ प्रबंधन दोनों में काफी मदद मिलेगी। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने चारधाम यात्रा में आने वाले श्रद्धालुओं को जीआईएस टैग देने की सिफारिश की है। यह टैग यात्रियों की लोकेशन ट्रैक करेगा, जिससे प्रशासन को रियल टाइम में हर यात्री की स्थिति की जानकारी मिल सकेगी। यात्रा मार्ग पर जगह-जगह जीआईएस रीडर लगाए जाएंगे। जैसे ही

कोई श्रद्धालु इन पॉइंट्स से गुजरेगा, उसकी जानकारी स्वतः स्कैन होकर कंट्रोल रूम तक पहुंच जाएगी। इससे प्रशासन को रियल टाइम में यह पता रहेगा कि कौन यात्री कहां है, किस रूट पर कितनी भीड़ है और किस समय कौन सा धाम अधिक व्यस्त है।

पहले से लागू सिस्टम अब और सख्ती

वर्तमान में चारधाम यात्रा के लिए रजिस्ट्रेशन, ग्रीन कार्ड और ट्रिप कार्ड की व्यवस्था पहले से लागू है, जिसमें यात्रियों का पूरा विवरण दर्ज किया जाता है, यात्रा की तारीख और स्वास्थ्य संबंधी जानकारी ली जाती है और एनपीआर कैमरों के जरिए वाहनों की निगरानी होती है। अब जीआई सिस्टम जुड़ने से यह निगरानी और अधिक सटीक और प्रभावी हो जाएगी। मुख्य सलाहकार मेजर जनरल सुधीर बहल ने कहा है कि 60 साल से अधिक उम्र के यात्रियों के लिए मेडिकल सर्टिफिकेट अनिवार्य किया जाए।

आपदा में 'लास्ट लोकेशन' से तुरंत मदद

इस सिस्टम का सबसे बड़ा फायदा आपात स्थिति में सामने आएगा। अगर कोई श्रद्धालु रास्ता भटक जाए, अचानक बीमार पड़ जाए या लापता हो जाए, तो सिस्टम में दर्ज उसकी आखिरी लोकेशन तुरंत ट्रेस की जा सकेगी। इससे रेस्क्यू टीम बिना समय गंवाए सटीक स्थान तक पहुंच सकेगी, खोजबीन में लगने वाला समय घटेगा और गंभीर हालात में जान बचाने की संभावना भी काफी बढ़ जाएगी। रजिस्ट्रेशन के समय हर यात्री को कार्ड या टैग दिया जाएगा, जिसमें नाम, उम्र और यात्रा रूट से जुड़ी डिजिटल जानकारी दर्ज रहेगी। यात्रा मार्ग पर जगह-जगह लगे रीडर इस टैग को बिना छुए स्कैन करेंगे।

'समान नागरिक संहिता' के नाम पर आदिवासी अस्मिता से समझौता नहीं

नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने केंद्र सरकार पर सवाल उठाया

भोपाल। मध्यप्रदेश विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने समान नागरिक संहिता (यूसीसी) को लेकर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए कहा है कि यह कानून आदिवासी समाज की पहचान, परंपराओं और संवैधानिक अधिकारों के लिए गंभीर खतरा बन सकता है। उन्होंने कहा कि भारत विविधताओं का देश है, जहां आदिवासी समाज अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक विरासत, परंपराओं और सामाजिक व्यवस्थाओं के साथ सदियों से जीवन यापन कर रहा है। ऐसे में एकरूप कानून थोपना न केवल उनकी परंपराओं का अनादर है, बल्कि यह उनके अधिकारों का भी उल्लंघन है।

नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि संविधान के अनुच्छेद 44 में यूसीसी को 'राज्य के नीति निदेशक तत्व' में रखा गया था, क्योंकि संविधान सभा यह समझती थी कि विविधताओं वाले देश में इस विषय पर व्यापक सहमति बनानी होगी। यह कोई तत्काल लागू होने वाला अनिवार्य अधिकार नहीं, बल्कि एक मार्गदर्शक सिद्धांत था। लेकिन बीजेपी सरकार इसे जल्दबाजी, बिना संवाद और बिना लोकतांत्रिक प्रक्रिया के थोपने का प्रयास रही है।

सिंघार ने कहा कि यूसीसी के नाम पर जो एकरूपता थोपी जा रही है, वह 'विविधता में एकता' के हमारे मूल मंत्र को तोड़ती है। आदिवासी समाज की अपनी सामाजिक व्यवस्था, विवाह, उत्तराधिकार और भूमि से

जुड़े रीति-रिवाज सदियों पुराने हैं। पांचवी और छठी अनुसूची उन्हें सांस्कृतिक स्वायत्तता देती है। यदि यूसीसी बिना छूट के लागू हुई, तो यह संविधान की भावना के खिलाफ होगा। उन्होंने सरकार के 'समानता' के तर्क पर सवाल उठाते हुए कहा कि समानता का अर्थ एकरूपता नहीं होता, बल्कि हर समुदाय की विशिष्टता को सम्मान देते हुए न्याय सुनिश्चित करना होता है। उन्होंने चिंता जताई कि न तो आदिवासी संगठनों, न पंचायतों, न ही किसी धार्मिक या सामाजिक समूह से चर्चा की गई।

बीजेपी की यही 'नया सामान्य' बन गया है! बिना विचार-विमर्श के कानून बनाना। यह अलोकतांत्रिक, असांप्रदायिक और असंवैधानिक है। सरकार को साफ जवाब देना चाहिए कि क्या यूसीसी आदिवासियों पर लागू होगी? यदि नहीं, तो संरक्षण की गारंटी क्यों नहीं दी जा रही? यह अनिश्चितता जानबूझकर फैलाया गया भय है।÷ सिंघार ने सरकार से स्पष्ट जवाब मांगते हुए कहा कि क्या आदिवासी समुदायों को यूसीसी के दायरे में लाया जाएगा या उन्हें इससे बाहर रखा जाएगा। साथ ही उन्होंने मांग की कि आदिवासी समाज को इस संहिता से बाहर रखा जाए और उनकी परंपराओं व अधिकारों की पूर्ण सुरक्षा सुनिश्चित की जाए।

सिंघार ने कहा कि बिना सहमति और संवाद के लाया गया कानून समाज में बंटवारे का काम करेगा। ÷यूसीसी की घोषणा ने एकता की बजाय अलगाव पैदा किया है। सरकार तुष्टीकरण की राजनीति छोड़े, आदिवासी समाज को यूसीसी के दायरे से बाहर रखा जाए और सभी समुदायों को विश्वास में लेते हुए कोई साझा मसौदा तैयार किया जाए। जल्दबाजी और अलोकतांत्रिक तरीका बीजेपी की असहिष्णु सोच को दर्शाता है। उन्होंने सरकार से अपील की कि इस मुद्दे पर विधानसभा में विस्तृत चर्चा हो, सभी धर्मों, जनजातियों और अल्पसंख्यकों को साथ लेकर ही कोई नीति बने, अन्यथा यह देश की सांस्कृतिक विविधता के लिए घातक साबित होगी।

सीजेआई सूर्यकांत बोले-भारत केवल पूंजी या पॉलिसी के दम पर 10 ट्रिलियन डॉलर इकॉनोमी नहीं बन सकता

इकॉनोमी में कानून की भूमिका है बहुत अहम

नई दिल्ली (एजेंसी)। सीजेआई सूर्यकांत ने कहा कि भारत को 10 ट्रिलियन डॉलर की इकॉनॉमी बनाने के लिए सिर्फ पूंजी और पॉलिसी काफी नहीं होंगी। इसके लिए मजबूत और भरोसेमंद कानूनी व्यवस्था भी उतनी ही जरूरी होगी। निवेशकों का भरोसा इसी पर टिका होता है। जस्टिस सूर्यकांत शनिवार को बार एसोसिएशन ऑफ इंडिया के 'रूल ऑफ लॉ कन्वेंशन 2026' में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि यह सिर्फ एक लक्ष्य नहीं, बल्कि देश के भविष्य से जुड़ा बड़ा सवाल है।

कानून विवादों के लिए तीन अहम जरूरतें

कानून में स्थिरता ताकि अलग-अलग हालात में भी एक जैसे सिद्धांत लागू हों। विवाद होने से पहले ही उन्हें रोकने की संस्कृति, जिसमें 'गुड फेथ' यानी ईमानदारी से अनुबंध निभाने की भावना हो। उन्होंने कहा कि अगर मध्यस्थता को बढ़ावा दिया जाए और विवादों को पहले ही सुलझाने की संस्कृति बने, तो इससे भारत की आर्थिक प्रतिस्पर्धा को बहुत फायदा होगा।

तकनीक का उद्देश्य सिर्फ प्रक्रिया को आसान और तेज बनाना

सीजेआई ने यह भी कहा कि जजों के लिए समय-समय पर प्रशिक्षण जरूरी है, ताकि वे आर्थिक व्यवस्था की बारीकियों को समझ सकें। इसके लिए डोमेन एक्सपर्ट्स के साथ बातचीत जैसे कदम उठाने की जरूरत है। तकनीक की भूमिका पर बात करते हुए सीजेआई ने कहा कि इसे कानूनी सिस्टम का हिस्सा माना जाना चाहिए, न कि सिर्फ एक अतिरिक्त सुविधा। डिजिटल केस मैनेजमेंट, एआई आधारित रिसर्च और इलेक्ट्रॉनिक प्रक्रियाएं न्याय की गति और लागत को सीधे प्रभावित करती हैं। हालांकि, उन्होंने यह भी साफ किया कि तकनीक के बावजूद इंसानी निर्णय ही न्याय का केंद्र रहेगा।

बीजेपी और ईसी ने की मेरी उम्मीदवारी रद्द करने की कोशिश

● सीएम ममता बनर्जी ने लगाया बड़ा आरोप, बीजेपी रही निशाने पर

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में बीजेपी और टीएमसी में आरोप-प्रत्यारोप का दौर लगातार जारी है। सीएम ममता बनर्जी ने शनिवार को एक बार फिर बीजेपी पर हमला बोला है। उन्होंने कहा कि बीजेपी ने झूठे मामले दर्ज करवाकर और चुनाव आयोग की मदद से भवानीपुर सीट से उनकी उम्मीदवारी रद्द करवाने की कोशिश की। उन्होंने दावा किया कि उनके पार्टी के कार्यकर्ताओं और जनता ने इस कदम को नाकाम कर दिया। पश्चिम मेदिनीपुर जिले के केशियरी में सीएम ममता बनर्जी ने एक रैली को संबोधित किया। उन्होंने रैली में कहा कि बीजेपी ने चुनाव आयोग की मदद से मेरे खिलाफ झूठे केस दर्ज करवाकर भवानीपुर से मेरी उम्मीदवारी को रद्द करने की कोशिश की, लेकिन हमने उनकी इस साजिश को नाकाम कर दिया। उन्होंने एक बार फिर बीजेपी पर एसआईआर के दौरान वोटर लिस्ट में हेरफेर करने का आरोप लगाया।

इस्तीफे से पहले ही सीएम आवास खाली करने लगे नीतिश कुमार

पटना में शिफ्टिंग हो गई शुरू,अब बनेंगे लालू यादव के पड़ोसी

पटना (एजेंसी)। मुख्यमंत्री नीतिश कुमार के राज्यसभा सदस्य के रूप में शपथ लेने के एक दिन बाद ही उनके आधिकारिक आवास से शिफ्टिंग की प्रक्रिया शुरू हो गई है। सीएम पद छोड़ने से पहले ही 1 अणे मार्ग से 7 सर्कुलर रोड स्थित आवास में सामान शिफ्ट किया जा रहा है।

चर्चा है कि मुख्यमंत्री पद छोड़ने के बाद वे इसी आवास में रहेंगे। 10 अप्रैल को राज्यसभा सदस्य के रूप में शपथ लेने के बाद यह कयास लगाए जा रहे हैं

कि 14 अप्रैल को नीतिश कुमार मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे सकते हैं।

इसके अगले ही दिन बिहार में नई सरकार के गठन की संभावना जताई जा रही है। हालांकि इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। बताया जा रहा है कि हाल के दिनों में उन्होंने 7 सर्कुलर रोड स्थित इस आवास का एक-दो बार निरीक्षण भी किया था।

लालू परिवार के पड़ोसी बनेंगे नीतीश

7 सर्कुलर रोड आवास में रहते हुए ही बाद में उन्होंने मांझी को हटाकर दोबारा सत्ता संभाली थी, हालांकि यह बंगला लंबे समय तक उनके कब्जे में रहा। विपक्ष की ओर से 'दो-दो बंगला' रखने के आरोप के बाद इसे मुख्य सचिव के नाम आवंटित कर दिया गया था। यह आवास पूर्व सीएम राबड़ी देवी को आवंटित 10 सर्कुलर रोड के बगल में ही स्थित है। ऐसे में मुख्यमंत्री पद छोड़ने के बाद नीतिश कुमार राजद प्रमुख लालू प्रसाद के पड़ोसी बन जाएंगे। जानकारी के अनुसार, इस बंगले में 6 वीआईपी बेडरूम, 2 बड़े ड्राइंग रूम और एक विशाल सभागार मौजूद है।

अब विदेशी निर्भरता खत्म करेगी भारतीय नौसेना

● देश की ही प्राइवेट कंपनियां बनाएंगी मिग-29 के फाइटर जेट्स के पुर्जे ● रखरखाव चुनौतियों का समाधान, नौसेना की परिचालन क्षमता में होगी वृद्धि

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय नौसेना ने आत्मनिर्भरता और मेक इन इंडिया को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण पहल की है। नौसेना ने अपने रूसी मूल के मिग-29 के लड़ाकू विमानों की महत्वपूर्ण उप-प्रणालियों और परीक्षण प्रणालियों के स्वदेशी विकास के लिए भारतीय निजी कंपनियों को आमंत्रित किया है। भारतीय नौसेना के इस पहल का उद्देश्य विदेशी आपूर्तिकर्ताओं पर निर्भरता कम करना और महत्वपूर्ण विमान घटकों पर भारत की आत्मनिर्भरता को मजबूत करना है। ताकि समुद्री सीमाओं की सुरक्षा में तैनात यह लड़ाकू विमान हर समय युद्ध के लिए तैयार रहे।

मिग-29 अत्याधुनिक लड़ाकू विमान

दरअसल, मिग-29के अत्याधुनिक, हर मौसम में कारगर रहने वाला सुपरसोनिक बहु-भूमिका लड़ाकू विमान है, यह भारतीय नौसेना का प्रमुख विमानवाहक पोत आधारित हमलावर विमान है। यह आईएनएस विक्रमादित्य और आईएनएस विक्रांत से संचालित होता है और हवाई वर्चस्व, समुद्री हमले और समुद्री नियंत्रण पर विशेष ध्यान देता है। नौसेना को इसके रखरखाव, पुर्जों की उपलब्धता और सेवायोग्यता से संबंधित चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। कई बार ऐसा देखने में आया है कि विमानों के मेंटेनेंस की जरूरतें समय पर पूरा नहीं हो पाती, ऐसे में भारतीय नौसेना ने मिग-29 के फाइटर जेट्स की परिचालन क्षमता और रखरखाव को मजबूत करने के लिए स्वदेशी निजी कंपनियों, एमएसएमई और रक्षा फर्मों को आमंत्रित किया है। नौसेना ने उन प्रतिष्ठित भारतीय फर्मों को आमंत्रित किया है, जिनके पास इस परियोजना को क्रियान्वित करने के लिए तकनीकी और वित्तीय क्षमता, बुनियादी ढांचा और अनुभव हो। ये फर्म भारत में स्थित हों और जिनके पास इस परियोजना को क्रियान्वित करने की तकनीकी और वित्तीय क्षमता, बुनियादी ढांचा और अनुभव हो। यह निजी कंपनियां संभवतः रक्षा क्षेत्र के सार्वजनिक उपक्रमों और अनुसंधान संगठनों के साथ मिलकर काम करेंगी। इस कदम का उद्देश्य स्वदेशी विनिर्माण क्षमताओं को मजबूत करना और आपूर्ति श्रृंखला नियंत्रण के माध्यम से राष्ट्रीय सुरक्षा को बढ़ाना है।

'बड़ी बेशर्मी से कहा नहीं गाऊंगी'

वंदे मातरम के अपमान पर भड़के सीएम मोहन यादव, कांग्रेस से मांगा इस्तीफा

भोपाल (नप्र)। इंदौर नगर निगम के बजट सम्मेलन के दौरान शुरू हुआ 'वंदे मातरम' विवाद अब पूरे प्रदेश की राजनीति का केंद्र बन गया है। कांग्रेस पार्षदों द्वारा सार्वजनिक रूप से राष्ट्रगीत गाने से इनकार करने पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने बेहद कड़ी प्रतिक्रिया दी है। मुख्यमंत्री ने इसे देशभक्तों का अपमान बताते हुए कहा कि अगर कांग्रेस नेतृत्व इस पर कार्रवाई नहीं कर सकता, तो पूरी प्रदेश इकाई को इस्तीफा दे देना चाहिए। इंदौर नगर निगम में कांग्रेस पार्षद रुबीना इकबाल खान और फौजिया शेख अलीम ने धर्म का हवाला देकर वंदे मातरम गाने से मना कर दिया था। इस घटना का वीडियो सामने आने के बाद मुख्यमंत्री ने भोपाल में मीडिया से चर्चा करते हुए कहा कि बड़े दुर्भाग्य के साथ कहना पड़ रहा है कि कांग्रेस की पार्षद ने बेशर्मी के साथ कहा कि मैं नहीं गाऊंगी। यह केवल एक पार्षद का बयान नहीं, बल्कि कांग्रेस के उस चरित्र को दर्शाता है जो हमेशा से राष्ट्र प्रतीकों के खिलाफ रहा है।

जीतू पटवारी और राहुल गांधी से सीधे सवाल

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व को कटघरे में खड़ा किया। उन्होंने सवाल उठाया कि हर छोटी बात पर मुखर रहने वाले प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी इस राष्ट्रद्रोह जैसे कृत्य पर चुप क्यों हैं? सीएम ने कहा कि राहुल गांधी और राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे को स्पष्ट करना चाहिए कि क्या वे इस तरह की मानसिकता को पार्टी में प्रोत्साहित कर रहे हैं। हजारों देशभक्तों ने भारत माता की जय बोलते-बोलते अपने प्राणों की आहुति दे दी। जब कांग्रेस पार्षद भगवान राम और हिंदुओं की निंदा करते हैं, तब पार्टी चुप रहती है। लेकिन अब राष्ट्रगीत के अपमान पर मौन रहना यह बताता है कि वे देश को किस दिशा में ले जाना चाहते हैं।

पुरानी है वंदे मातरम की खींचतान?

मुख्यमंत्री ने कांग्रेस के इतिहास को कुरेदते हुए कहा कि यह पार्टी आजादी के पहले से ही वंदे मातरम पर बखेड़ा खड़ा करती रही है। डॉ. यादव के अनुसार, कांग्रेस की पुरानी सरकारों ने राष्ट्रगीत के मूल स्वरूप से छेड़छाड़ की थी। विशेषज्ञ मानते हैं कि चुनाव से पहले राष्ट्रवाद के मुद्दे पर कांग्रेस को घेरकर बीजेपी अपनी पैठ और मजबूत करना चाहती है, खासकर तब जब मामला सीधे तौर पर राष्ट्रगीत के सम्मान से जुड़ा हो।

मुख्यमंत्री ने महात्मा ज्योतिबा फुले की जयंती पर किया नमन

भोपाल । मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने समानता, शिक्षा और सामाजिक न्याय के प्रबल अग्रदूत, महात्मा ज्योतिबा फुले की जयंती पर पुण्य स्मरण कर उन्हें नमन किया है।मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि महात्मा फुले ने कुरीतियों और असमानता के खिलाफ खुलकर आवाज़ उठाई और शिक्षा के जरिए महिलाओं और वंचितों के लिए अवसर सृजित किए। उनके विचार हम सबको समरसता और मानवता के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं।

भोपाल पहुंचते ही रोकी गई आंगनवाड़ी न्याय पदयात्रा

11 दिन में 200 किमी तय किए आंगनवाड़ी-आशा कार्यकर्ताओं को सरकारी दर्जा देने की मांग

भोपाल (नप्र)। आंगनवाड़ी और आशा कार्यकर्ताओं को सरकारी कर्मचारी का दर्जा दिलाने की मांग को लेकर निकले छात्र नेता रामकुमार नागवंशी की पदयात्रा भोपाल पहुंचते ही रुक गई। करीब 200 किलोमीटर की यात्रा कर राजधानी पहुंचे नागवंशी और उनके साथियों को पुलिस ने बरकतुल्ला यूनिवर्सिटी के पास रोक लिया। इसके बाद उन्हें आगे बढ़ने से मना करते हुए एक होटल के पास बैठा दिया गया। आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की मांगों को लेकर शुरू की गई 200 किलोमीटर लंबी पदयात्रा के जरिए सरकार तक अपनी आवाज पहुंचाने की कोशिश की जा रही है। यह पदयात्रा 1 अप्रैल (बुधवार) को बैतूल जिले के अंबेडकर चौक से शुरू हुई थी, जिसका लक्ष्य 11 दिनों में भोपाल पहुंचना था।

आंगनवाड़ी न्याय पदयात्रा के नाम से शुरू किया आंदोलन- पूर्व में एनएसयूआई से जुड़े रहे रामकुमार नागवंशी ने इस अभियान को आंगनवाड़ी न्याय पदयात्रा नाम दिया। उनका कहना है कि गांव-गांव जाकर सेवा देने वाली आंगनवाड़ी और आशा कार्यकर्ताओं को अब तक न तो सम्मानजनक वेतन मिला है और न ही सरकारी कर्मचारी का दर्जा।

परिवार के संघर्ष से मिला आंदोलन का संकल्प- नागवंशी ने बताया कि उनकी भाभी और बहन स्वयं आंगनवाड़ी कार्यकर्ता हैं। उनके संघर्ष को करीब से देखने के बाद ही उन्होंने यह पदयात्रा शुरू करने का निर्णय लिया। उन्होंने कहा कि यह लड़ाई केवल उनकी नहीं, बल्कि लाखों महिलाओं के अधिकारों की है, जो वर्षों से न्यूनतम सुविधाओं के साथ काम कर रही हैं।

भोपाल पहुंचते ही पुलिस ने रोका

रामकुमार नागवंशी ने बताया कि जब वे सुबह करीब 8:45 बजे बरकतुल्ला यूनिवर्सिटी के पास पहुंचे, तभी पुलिस ने उन्हें और उनके साथियों को रोक लिया। उन्होंने आरोप लगाया कि उन्हें आगे मुख्यमंत्री निवास की ओर नहीं जाने दिया जा रहा और पास के एक होटल के बाहर बैठा दिया गया है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने की केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की आत्मीय अगवानी

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने केन्द्रीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह की शनिवार को भोपाल के स्टेट हैंगर पर आत्मीय अगवानी की। केन्द्रीय रक्षा मंत्री श्री सिंह रायसेन में आयोजित कृषि महोत्सव प्रर्दशनी एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ के लिए ट्रांजिट विजिट पर स्टेट हैंगर भोपाल आये। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने केंद्रीय रक्षा

मंत्री श्री सिंह का पुष्प-गुच्छ एवं शॉल ओढ़ाकर प्रदेश में आत्मीय स्वागत-अभिनंदन किया। मुख्यमंत्री ने केंद्रीय रक्षा मंत्री को स्मृति चिन्ह भी भेंट किया।स्टेट हैंगर में अल्प-विश्राम के बाद केन्द्रीय रक्षा मंत्री श्री सिंह, मुख्यमंत्री डॉ. यादव तथा केन्द्रीय किसान कल्याण एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान भारतीय सेना के हेलीकॉप्टर से रायसेन के लिए रवाना हुए।पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग, पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर, भोपाल के लोकसभा सांसद श्री आलोक शर्मा, विधायक श्री विष्णु खत्री, महापौर श्रीमती मालती राय, जिलाध्यक्ष श्री रविन्द्र यति, जनप्रतिनिधि एवं वरिष्ठ अधिकारियों ने भी केंद्रीय मंत्री श्री सिंह को पुष्प-गुच्छ भेंट किए।

सीएम हाउस के पास

साइकिलिंग कर रहे डॉक्टर की आंखों में मिर्च झोंककर सोना और कैश लूटा

गिरे तो कूल्हा भी टूटा

भोपाल (नप्र)। राजधानी के सबसे हाई-प्रोफाइल और सुरक्षित माने जाने वाले श्यामला हिल्स इलाके में बदमाशों ने दुस्साहस की सभी हदें पार कर दीं। मुख्यमंत्री आवास से कुछ ही दूरी पर स्थित किलोल पार्क के पास बाइक सवार लुटेरों ने एक सीनियर डॉक्टर को अपना शिकार बनाया। बदमाशों ने डॉक्टर की आंखों में मिर्ची झोंक दी और उनका 110 ग्राम वजनी सोने का ब्रेसलेट, स्मार्टवॉच और बटुआ लूटकर फरार हो गए।

साइकिलिंग से लौट रहे डॉक्टर को घेरा- प्रोफेसर कॉलोनी निवासी डॉ. मनोज वर्मा, जो राज्य टीबी प्रशिक्षण केंद्र के निदेशक हैं, शुक्रवार सुबह करीब 10 बजे अपनी नियमित साइकिलिंग के बाद घर लौट रहे थे। किलोल पार्क और एक आइसक्रीम पार्लर के बीच मुख्य सड़क पर पीछे से आए बाइक सवारों ने जानबूझकर उनकी साइकिल में टक्कर मार दी। डॉक्टर के गिरते ही बदमाशों ने उनके चेहरे पर लाल मिर्च पाउडर का छिड़काव कर दिया ताकि वे कुछ देख न सकें।

रेकी और साजिश का शक, कूल्हा टूटा- हमला इतना जोरदार था कि गिरने की वजह से डॉ. वर्मा के कूल्हे में फ्रैक्चर हो गया

है। बदमाशों ने तुरंत उनके हाथ से सोने का भारी ब्रेसलेट, स्मार्टवॉच और करीब 2500 रुपये नकद वाला बटुआ छीन लिया। पुलिस को संदेह है कि बदमाशों ने डॉक्टर की दिनचर्या की पहले से रेकी की थी।

बदमाशों के काम करने के तरीके से लगता है कि उन्हें डॉक्टर के आने-जाने के समय और उनके पास मौजूद कीमती सामान की पूरी जानकारी थी। यह एक सुनियोजित वारदात हो सकती है।

- **सुरक्षा पर उठे बड़े सवाल-** यह वारदात महज एक लूट नहीं है, बल्कि भोपाल पुलिस की सुरक्षा व्यवस्था पर बड़ा सवालिया निशान है। जिस श्यामला हिल्स इलाके में 24 घंटे वीवीआईपी मूवमेंट रहता है और चप्पे-चप्पे पर पुलिस तैनात होती है, वहां दिनदहाड़े इस तरह की वारदात होना पुलिस गश्त की पोल खोलता है। डॉक्टर फिलहाल अस्पताल में उपचाराधीन हैं और पुलिस इलाके के सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही है ताकि संदिग्धों की पहचान की जा सके।

गेहूं की क्वालिटी जांचने केंद्र से भोपाल पहुंची टीम

खरीदी केंद्रों पर पहुंचे अफसर, आंधी-बारिश की वजह से दाना सिकुड़ा मिला

भोपाल (नप्र)। आंधी और बारिश से बर्बाद हुई गेहूं की फसल की जांच करने के लिए केंद्र से एक टीम भोपाल पहुंची है। पिछले दो दिन में यह टीम एक दर्जन गेहूं खरीदी केंद्रों का निरीक्षण कर चुकी है। टीम देख रही है कि आंधी-बारिश से गेहूं की क्वॉलिटी कितनी खराब हुई है?

टीम यह रिपोर्ट केंद्र सरकार को सौंपेगी। ताकि, नुकसान का आंकलन हो सके। टीम शुक्रवार को ही भोपाल पहुंच गई थी। शनिवार को भी कई केंद्रों पर टीम ने निरीक्षण किया। बता दें कि भोपाल में समर्थन मूल्य पर गेहूं खरीदी के 92 केंद्र बनाए गए हैं।गेहूं का दाना सिकुड़ा मिलाबताया जाता है कि निरीक्षण के दौरान टीम को कई जगहों पर गेहूं की क्वॉलिटी ठीक नहीं मिली। दाना सिकुड़ा मिला तो रंग भी कमजोर था। शनिवार को भारत सरकार की खाद्य मंत्रालय की टीम ने लेक्चर लॉस गेहूं के संबंध में केंद्रों का निरीक्षण किया।इनमें स्टील साइलो मुंगालिया कोर्ट, सुविधा वेयर हाउस निपानिया, आर्य वेयर हाउस निपानिया ठाकुर, शिव वेयर हाउस भौंरासा एवं सोनिका वेयर हाउस खरीदी केंद्रों का निरीक्षण किया गया।जिसमें मिनिस्ट्री की टीम के अधिकारी, खाद्य विभाग, नागरिक आपूर्ति निगम एवं वेयर हाउस के अधिकारी शामिल थे।

पूर्व राजदूत दीपक भोपाल में बोले-

ईरान के साथ कोई खुलकर नहीं; खाड़ी देशों पर हमला उसकी बड़ी भूल

पाकिस्तान डोनाल्ड ट्रंप का पालतू

भोपाल (नप्र)। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की कार्यशैली, पाकिस्तान की तथाकथित मध्यस्थता और भारत की विदेश नीति को लेकर पूर्व राजदूत दीपक वोहरा ने तीखा और अलग नजरिया रखा। उनका कहना है कि आज अमेरिका पहले से ज्यादा आइसोलेटेड दिख रहा है। वहीं ईरान के साथ भी कोई देश खुलकर खड़ा नहीं है।

खाड़ी देशों पर हमला करना ईरान की बड़ी रणनीतिक गलती रही। पाकिस्तान को उन्होंने दमहीन बताते हुए उसकी मध्यस्थता के दावे खारिज किए, जबकि भारत की रणनीति को स्ट्रेटेजिक साइलेंस और परिपक्व डिप्लोमेसी का उदाहरण बताया। बता दें कि दीपका वोहरा शौर्य गाथा और शौर्य अलंकरण कार्य्रकम में भाग लेने के लिए भोपाल पहुंचे हैं।

- **अमेरिका आज पहले से ज्यादा आइसोलेटेड-** दीपक वोहरा ने कहा कि अमेरिका और ईरान के बीच चल रहे तनाव में दोनों पक्षों की बातों में विरोधाभास साफ नजर आता है। एक ओर ईरान कहता है कि उसे कोई नुकसान नहीं हुआ, वहीं दूसरी ओर 200 बिलियन डॉलर मुआवजे की मांग करता है। उनके मुताबिक अगर नुकसान नहीं हुआ तो मुआवजा क्यों? उन्होंने कहा कि अमेरिका आज पहले से ज्यादा आइसोलेटेड नजर आ रहा है, जबकि ईरान के साथ भी कोई देश खुलकर खड़ा नहीं है। खाड़ी देशों पर हमला करना ईरान की बड़ी रणनीतिक गलती रही। चाणक्य का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि युद्ध में उतरने से पहले अपनी और विरोधी की ताकत का आकलन जरूरी है, लेकिन ईरान यह जानते हुए भी भिड़ गया कि उसे नुकसान

उठाना पड़ेगा।

- **संयुक्त राष्ट्र बेकार की संस्था-** गाजा पट्टी के हालात पर उन्होंने संयुक्त राष्ट्र को बेकार की संस्था बताया और कहा कि वहां भारी तबाही हुई है, जिसकी भरपाई में दशकों लगेंगे। उन्होंने कहा कि जंग में सबसे पहले सच्चाई मरती है और हर देश अपने हिसाब से प्रोपेगेंडा करता है। जो नुकसान हुआ है, उसे छिपाया जाता है और वही दिखाया जाता है जहां कुछ नहीं हुआ, उन्होंने कहा। ईरान के परमाणु कार्यक्रम पर उन्होंने कहा कि यह दशकों की तैयारी का नतीजा है और उसका तर्क यह है कि नॉर्थ कोरिया पर हमला इसलिए नहीं होता क्योंकि उसके पास परमाणु हथियार हैं।
- **हमास और हिज्बुल्ला स्कूल और अस्पतालों में रखते हैं हथियार-** उन्होंने कहा कि हमास और हिज्बुल्ला जैसे संगठन स्कूल और अस्पतालों में हथियार रखते हैं, जिससे युद्ध में निर्णय लेना बेहद कठिन हो जाता है। अगर अस्पताल के नीचे हथियार हैं तो क्या करेंगे, यह सबसे कठिन सवाल है, उन्होंने कहा।
- **सीजफायर में पाकिस्तान की कोई भूमिका नहीं-** पाकिस्तान के सीजफायर कराने के दावे को खारिज करते हुए दीपक वोहरा ने कहा कि यह फैसला अमेरिका और ईरान के बीच हुआ, पाकिस्तान की इसमें कोई भूमिका नहीं थी। उन्होंने कहा कि सीजफायर तब हुआ जब पिटाई हो रही थी। 1971 के युद्ध का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि असली लीडरशिप वही होती है जब आप खुद तय करें कि कब युद्ध खत्म करना है। कारगिल का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि उस समय पाकिस्तान का नेतृत्व अमेरिका के पास मदद के लिए गया था। उन्होंने साफ कहा कि पाकिस्तान के पास ऐसी कोई क्षमता नहीं है कि वह बड़े देशों के बीच मध्यस्थता कर सके।

अच्युतानंदन ने किया सप्रे संग्रहालय का अवलोकन

भोपाल । देश के वरिष्ठ पत्रकार एवं संपादक तथा माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के पूर्व कुलगुरु अच्युतानंद मिश्र, विवि के वर्तमान कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी, सप्रे संग्रहालय के संस्थापक पद्मश्री विजयदत्त श्रीधर, प्रोफेसर संजय द्विवेदी, स्वदेश अखबार के प्रधान संपादक राजेंद्र शर्मा, दत्तोपंत ठेंगड़ी शोध संस्थान के निदेशक मुकेश कुमार मिश्र तथा एकात्म धाम के न्यासी सचिव मनीष पांडे के साथ ज्ञानतीर्थ माधवराव सप्रे समाचार

पत्र संग्रहालय में भ्रमण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस अवसर पर सप्रे संग्रहालय के संस्थापक विजयदत्त श्रीधर ने संग्रहालय में उपलब्ध विपुल ज्ञान-संपदा तथा वहाँ संरक्षित ऐतिहासिक सामग्री के संबंध में विस्तृत जानकारी प्रदान की।

मादा चीता गामिनी ने 4 शावकों को जन्म दिया

कूनो नेशनल पार्क में बढ़ा कुनबा, भारत में चीतों की संख्या अब 57 हुई

श्योपुर (नप्र)। मध्य प्रदेश के श्योपुर स्थित कूनो नेशनल पार्क से चीता संरक्षण परियोजना के लिए बड़ी खुशखबरी सामने आई है। करीब 25 माह की भारतीय मूल की मादा चीता 'गामिनी' ने जंगल में 4 शावकों को जन्म दिया है। इस जन्म के साथ ही देश में चीतों की कुल संख्या बढ़कर 57 हो गई है। केंद्रीय पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने शनिवार को सोशल मीडिया पर पोस्ट साझा कर इस सफलता पर खुशी जताई। वन विभाग की टीम और इस परियोजना से जुड़े सभी कर्मचारियों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि कूनो नेशनल पार्क में चल रही चीता संरक्षण परियोजना को यह एक बड़ी सफलता मिली है।

पहली बार जंगल में सफल प्रसूति- मंत्री भूपेंद्र यादव के अनुसार, 2022 में चीता पुनर्स्थापन कार्यक्रम शुरू होने के

बाद यह पहली बार है, जब किसी चीता ने प्राकृतिक जंगल वातावरण में शावकों को जन्म दिया है। यह उपलब्धि इसलिए भी खास है, क्योंकि यह किसी भारतीय मूल की मादा चीता की पहली सफल प्रसूति मानी जा रही है।

प्राकृतिक माहौल में ढल चुकी थी गामिनी

वन विभाग के अधिकारियों ने बताया कि मादा चीता गामिनी पिछले एक साल से अधिक समय से खुले जंगल में रह रही थी और वह प्राकृतिक परिस्थितियों के अनुरूप पूरी तरह ढल चुकी थी। जंगल में शावकों का जन्म इस बात का संकेत है कि कूनो का पर्यावरण अब चीतों के लिए अनुकूल साबित हो रहा है और वे यहां सुरक्षित रूप से प्रजनन कर पा रहे हैं।

हरदा के एक गांव में आग से 8 मकान जलकर राख

शॉर्ट सर्किट होने की आशंका

हरदा (नप्र)। हरदा जिले की ग्राम पंचायत बड़झिरी में शनिवार दोपहर आग लग गई। इस अग्निकांड में 7 से 8 मकान जलकर राख हो गए।

घटना दोपहर करीब साढ़े तीन बजे हुई।आग से घरों में रखा गृहस्थी का सारा सामान जलकर खाक हो गया। हादसे में 7 बकरियां, एक बैल और एक ट्रैक्टर भी जल गए। हालांकि, किसी जनहानि की सूचना नहीं है, जिससे बड़ी राहत मिली है।

कहानी-

महेन्द्र तिवारी

अपने हिस्से की जिंदगी

भीड़ भरी सड़क पर हर दिन संवेदनाओं का एक रेला गुज़रता है। हज़ारों चेहरे, हज़ारों मंज़िलें, लेकिन हर चेहरे के पीछे एक नितांत निजी संसार जो अनकही कहानियों और अदृश्य बोझ तले दबा हुआ है। भीड़ के इस समंदर में झाँकें, तो किसी की आँखों में वर्षों की थकी हुई उदासी तैरती नज़र आती है, तो किसी के माथे की लकीरों में भविष्य की चिंताओं का जाल बुना हुआ दिखता है। कुछ चेहरे तो ऐसे भी हैं, जिन पर एक अजीब-सा शून्य पसरा रहता है। एक ऐसा खालीपन, जो यह चीख-चीख कर कहता है कि इंसान भीड़ का हिस्सा होकर भी भीतर से कितना एकाकी हो सकता है।

आलोक भी एक ऐसा ही लड़का है, जिसकी आँखों में अनगिनत सपने हैं। इतने बड़े कि अक्सर वे यथार्थ की ऊँची दीवारों से टकराकर दरकने लगते हैं। स्वभाव से शांत और पढ़ाई में मेधावी आलोक का घर छोटा था, पर उसकी मजबूरियाँ बहुत विशाल। उसके घर की दीवारें वक्त से पहले ही जर्जर हो चुकी थीं, मानो संघर्षों की मार सहते-सहते उन्होंने भी घुटने टेक दिए हों। बरसात के दिनों में छत से टपकती बूंदें सिर्फ मकान की बदहाली नहीं बताती थीं, बल्कि यह अहसास दिलाती थीं कि इस परिवार की परेशानियाँ भी ठीक उसी तरह निरंतर और अविराम हैं।

उसके पिता एक छोटी सी सरकारी नौकरी में थे। तनख्वाह इतनी थी कि महीने की जरूरतें बस किसी तरह पूरी हो जाएँ, लेकिन इच्छाएँ हमेशा अधूरी रह जातीं। जिम्मेदारियों का बोझ उनके कंधों पर साफ दिखाई देता था, भले ही वे उसे शब्दों में कभी व्यक्त न करते हों। माँज इस घर की असली धुरी थी। सुबह से रात तक उनका दिन बस काम में बीत जाता। चूल्हा-चौका, कपड़े, सफाई, और परिवार की हर छोटी-बड़ी ज़रूरत के लिए हमेशा तत्पर रहती। उनके पास खुद के लिए समय जैसे कभी था ही नहीं। उनकी उंगलियाँ सूखकर खुरदुरी हो गई थीं, जैसे हर रेखा में त्याग की कहानी लिखी हो। लेकिन उनके चेहरे पर एक अजीब-सी शांति हमेशा बनी रहती। वो शांति जो खुशी से नहीं, बल्कि हालात से समझौता कर लेने के बाद आती है।

आलोक जब उन्हें देखता, तो उसे अपने सपनों का बोझ और भी भारी लगने लगता ज्क्योंकि अब वो सिर्फ उसके नहीं रहे थे, बल्कि पूरे परिवार की उम्मीद बन चुके थे। घर में हमेशा एक ही बात दोहराई जाती, बेटा, जिंदगी समझौते का नाम है। जो मिले, उसी में खुश रहो। संतोषी सदा सुखी।

पिता यह बात इतनी ठंडी आवाज़ में कहते कि लगता जैसे कोई सच बता रहे हों। कोई ऐसा सच जिसे उन्होंने अपनी कमर सीधी करके स्वीकार कर लिया हो।लेकिन आलोक के दिल में कहीं न कहीं यह बात चुभती रहती। वह रात को छत पर बैठकर तारों को देखता और सोचता, क्या सच में जिंदगी समझौता ही है? क्या इंसान अपने सपनों का मालिक नहीं हो सकता? क्या हर उस इंसान की कहानी समझौते पर खत्म होती है जिसके पास पैसे नहीं हैं?

बचपन में जब दूसरे बच्चे गलियों में गेंद उछालते, आलोक कोने में बैठकर डायरी में कुछ लिखता रहता। कहानियाँ बनाता, उड़ने वाले घोड़ों की, बादलों से बात करने वाले बच्चों की, उन दुनिया की जो असली नहीं थीं लेकिन उसे ज़िंदगी से ज़्यादा सच लगती थीं। मां ने एक बार उसकी डायरी उठाकर देख लिया था। कुछ पन्ने पढ़कर उनकी आंखें चमक उठी थीं। लेकिन फिर पिता की आवाज़ आई, यह सब करने से नौकरी नहीं लगेगी। किताबें पढ़ो बेटा, किताबें।

मां ने डायरी वापस रख दी थी चुपचाप। बिना कुछ कहे। लेकिन उस दिन आलोक ने मां की आंखों में एक अजीब सी बेचैनी देखी थी जैसे वह खुद भी कुछ कहना चाहती थीं, लेकिन कह नहीं पाई। शायद उनकी अपनी एक कहानी थी जो अधूरी रह गई थी। शायद कोई सपना जो वह कभी बयां नहीं कर पाई थीं।

कॉलेज खत्म होने के बाद आलोक ने अपनी डायरी आलमारी के किसी कोने में दबा दी थी। उसने सोचा शायद उसके पिता सही कहते हैं। शायद सपने देखने वालों को ही तोड़ा जाता है। काफी मशक्कत के बाद आलोक को एक बड़ी कंपनी में नौकरी मिल गई थी। घर में खुशियों की लहर दौड़ गई। पिता गर्व से भर उठे। पहली बार उन्होंने आलोक के कंधे पर हाथ रखा। उस हाथ में एक अजीब सा स्नेह था जो आलोक ने पहले कभी महसूस नहीं किया था। मां की आंखों में सुकून था। वो सुकून जो एक मां को तब मिलता है जब उसे लगता है कि उसका बच्चा अब सुरक्षित है।

लेकिन वह नौकरी उसके सपनों की नहीं थी। वह सिर्फ एक मजबूरी थी। एक ऐसी मजबूरी जिसे उसने खुशी का नाम दे दिया था। हर सुबह छह बजे अलार्म बजता। वह उठता, तैयार होता, भीड़ भरी बस में सफर करता, ऑफिस पहुंचता। और फिर वही फाइलें, मीटिंग्स, बॉस की डांट, कलीगों का झगड़ा। शाम को जब वह घर लौटता, तो लगता जैसे कोई उसकी जान चूसकर ले गया हो। वह खुद को आईने में देखता और सोचता, क्या यही वो जिंदगी है, जो मैंने चाही थी? क्या मैं तीस साल बाद भी यही करूंगा? फाइलें देखूंगा, लोगों की बातें सुनूंगा, और एक दिन ऐसे मर ही जाऊंगा जैसे कभी जी ही नहीं पाया?

कभी-कभी रात को वह अपनी पुरानी डायरी निकालता। पीले पड़ चुके पन्नों पर उसके बचपन के शब्द लिखे हुए थे। वह उन्हें पढ़ता और एक अजीब सी कसक महसूस करता जैसे कोई उसका अपना हिस्सा उससे छीन लिया गया हो। एक दिन ऑफिस में एक नई प्रोजेक्ट मीटिंग थी। उसी मीटिंग में उसकी मुलाकात रिया से हुई। रिया एक फ्री लांसकंसल्टेंट थी। आत्मविश्वास से भरी हुई, अपनी शर्तों पर जीने वाली लड़की। उसके बाल खुले थे, आंखों में एक अलग ही चमक थी। वह चमक तब होती है जब कोई इंसान खुद के लिए जी रहा हो।

रिया ने पहली मीटिंग में ही बॉस के सामने अपनी बातें रख दी थी। सब चुप थे, लेकिन रिया ने डरे बिना बोला। आलोक उसे देखता रह गया था। उसे लगा इस लड़की में कोई अलग ही ताकत है। धीरे-धीरे दोनों की बातचीत शुरू हुई। पहले ऑफिस की बातें, फिर धीरे-धीरे ज़िंदगी की बातें। रिया ने बताया कि उसने भी एक नौकरी छोड़ी थी। उसके परिवार ने भी उसे समझाया था, ताने मारे थे। लेकिन उसने नहीं सुना।

रिया अक्सर कहती, आलोक, जिंदगी किसी और के हिसाब से नहीं जी जाती। लोग तुम्हें उस रास्ते पर चलने को कहेंगे जो उन्होंने चला है। लेकिन तुम्हारी जिंदगी तुम्हारी है। अगर जीनी है, तो अपने दिल की सुनो।

आलोक मुस्कुरा देता, लेकिन अंदर से वह जानता था कि उसमें इतना साहस नहीं है। वह डर से घिरा हुआ था। असफल होने के डर से, गिरने के डर से, लोगों की बातों के डर से।

एक शाम दोनों ऑफिस के बाहर चाय पी रहे थे। आसमान ने लालिमा ओढ़ राखी थी। रिया ने अचानक पूछा, तुम खुश तो हो ना, अपनी जिंदगी से?

आलोक ने चाय का घूंट लिया। कुछ पल चुप रहा। फिर पहली बार सच कहा, नहीं मैं खुश नहीं हूं। शायद कभी था भी नहीं।

यह कहते ही उसे अजीब सा हल्कापन महसूस हुआ जैसे सालों से छाती में दबा हुआ कोई पत्थर हट गया हो।

रिया ने उसकी आंखों में देखते हुए कहा, तो बदलो इसे। कोई और आकर तुम्हारी जिंदगी नहीं बदलेगा। ना मैं, ना तुम्हारे परिवार वाले। तुम्हें खुद उठना होगा, खुद लड़ना होगा, खुद अपनी जिंदगी की कहानी गढ़ना होगा।

कहानी? आलोक ने हैरत से पूछा।

रिया मुस्कुराई, हां, कहानी। शतरंज की रानी जैसे सबसे ताकतवर मोहरा होती है खुद का रास्ता खुद बनाती है। तुम्हें भी वैसे ही जीना होगा।

रिया की यह बात आलोक के दिल में उतर गई। पहली बार उसने महसूस किया कि वह अपनी ही जिंदगी का कैदी बन गया है और इस जेल की चाबी उसके अपने हाथ में है।

उस रात वह सो नहीं पाया। छत पर बैठकर उसने अपने बचपन के सपनों को याद किया। वह एक लेखक बनना चाहता था। कहानियाँ लिखना चाहता था, लोगों के दिलों को छूना। अपने शब्दों से दुनिया बदलनाज्यही उसका असली सपना था। लेकिन उसने क्या किया? उसने अपने सपनों को मारकर एक सुरक्षित रास्ता चुन लिया। और अब वो सुरक्षित रास्ता भी उसे तोड़ रहा था धीरे-धीरे, अंदर से।

अगले दिन ऑफिस में बैठा वह फाइलों के बीच घुट रहा था। एसी चल रही थी, लेकिन उसे ठंडक नहीं मिल रही थी। हर शब्द उसे बेगाना लग रहे थे। उसकी उंगलियाँ कीबोर्ड पर रुकी हुई थीं, लेकिन दिमाग कहीं और था। तभी उसने एक फैसला लिया। उसने तुरंत अपना इस्तीफा लिख दिया। हाथ कांप रहे थेज़दिल जोर से धड़क रहा थाज पूरा शरीर पसीने से तर थाज़लेकिन इस बार उसने डर को खुद पर हावी नहीं होने दिया। उसने डर को पी लिया पहली बार।

जब उसने अपने बॉस को इस्तीफा दिया, तो सब चौंक गए।

क्या पागलपन है ये?

इतनी अच्छी नौकरी क्यों छोड़ रहे हो?

एक दिन तुम्हें पछताना पड़ेगा अलोक, अपने फैसलों पर।

लेकिन इस बार आलोक के चेहरे पर एक अजीब-सी शांति थी। वो शांति जो किसी तूफान के बाद आती है, जब आसमान साफ हो जाता है। घर पहुंचकर उसने अपने पिता को सब बता दिया। घर में तूफान आ गया।

तुम्हें समझ नहीं है जिंदगी की ! पिता की आवाज़ गूंजी।

हमने तुम्हारे लिए क्या-क्या नहीं कियाज एक छोटी सी नौकरी भी नहीं कर पाए तुम?

लिखोगे? कलम से पेट भरेगा?

मां की आंखों में आंसू थे और पिता के शब्द तीर की तरह चुभ रहे थे। लेकिन इस बार आलोक जानता था कि ये तीर चोट पहुंचाते हैं, लेकिन मारते नहीं।

आलोक चुपचाप सब सुनता रहा। फिर उसने धीमी स्वर में कहा, पापा, मैं अब और समझौता नहीं कर सकता। मैं अपनी जिंदगी जीना चाहता हूंज अपने सपनों के साथ। अगर मैं गिरूंगा, तो खुद गिरूंगा। लेकिन कम से कम मरते दम तक जी भी लूंगा।

उस रात घर में सन्नाटा था। रसोई में मां की चम्मच बर्तनों से टकराने की आवाज़ भी नहीं आई। पिता अपने कमरे में बैठे रहे। और आलोक छत पर तारों के नीचे पहली बार खुद को आज़ाद महसूस कर रहा था। आने वाले दिन आसान नहीं थे। नौकरी छूट गई थी, बचत कम थी, और समाज की बातें अलग। रिश्तेदार ताने मारते, लिखने से कभी घर चलता है?

एम बी ए करके कलम घुमाएगा?

अभी तो नशे में है, जल्दी होश आ जाएगा।

पड़ोसियों की नज़रें बदल गईं। वो नज़रें जो पहले सम्मान से देखती थीं, अब हमदर्दी और तिरस्कार से देखने लगीं।

लेकिन आलोक अब बदल चुका था। वह हर दिन लिखता। सुबह उठकर, दोपहर को, रात को जागकर। अपने दर्द को, अपने सपनों को, अपनी कहानी को। कभी-कभी तो ऐसा लगता कि वह खुद को शब्दों में उतार रहा है, जैसे हर अक्षर उसकी जान का टुकड़ा हो। कई बार उसकी रचनाएँ अस्वीकृत हो जातीं। संपादक लौटा देते, ऐसा कुछ नया नहीं है,लोगों को पसंद नहीं आएगा,इसमें वो वाली बात नहीं है।÷

कई बार वह टूट जाताज रात को अकेले बैठकर रोताज सवाल करता कि क्या सच में वह पागल है? क्या पिता सही थे? क्या रिश्तेदार सही कहते हैं? लेकिन फिर रिया का एक फोन आता। या कभी वह खुद आकर उसके सामने बैठ जाती। बिना कुछ कहे। सिर्फ बैठी रहती। और यह चुप्पी ही आलोक को संभाल लेती। रिया हर कदम पर उसके साथ थी। लेकिन कभी उसके लिए नहीं, बल्कि उसके साथ। वह कहती, ÷हर गिरना तुम्हें मजबूत बना रहा है। असली कहानी तो अब शुरू हुई है।

एक दिन आलोक ने अपनी मां से बात की। उसने उन्हें अपनी एक कहानी सुनाई। उस कहानी में एक मां थी जो अपने सपने भूल गई थी, लेकिन उसका बेटा उन्हें वापस ला रहा था। मां ने पूरी कहानी सुनी। कोई शब्द नहीं बोले। बस आंखें पोंछीं। और फिर बहुत धीरे से बोलीं, लिखते रहो बेटा।

इन तीन शब्दों में आलोक को दुनिया भर की ताकत मिल गई। धीरे-धीरे आलोक की मेहनत रंग लाने लगी। उसकी एक कहानी एक प्रसिद्ध पत्रिका में छपी। उस दिन वह देर तक उस पन्ने को देखता रहाज उसने अपना नाम दस बार पढ़ा। उसकी आंखों में आंसू थे, लेकिन इस बार ये आंसू हार के नहीं, जीत के थे। वो जीत जो किसी अवार्ड से बड़ी थी। अपने शब्दों को दुनिया के सामने देखने की जीत।

कुछ ही महीनों में उसकी कहानियाँ लोगों के दिलों तक पहुंचने लगीं। लोग उसके शब्दों में खुद को देखने लगे। अपने टूटे सपने, अपनी अधूरी कहानियाँ, अपनी चुप रह गई आवाज़ें। एक दिन उसने अपनी पहली किताब पिता को थमाई। किताब का मुखपृष्ठ सादा था। बस एक लाइन लिखी थी, उन सपनों के लिए जो कभी बोले नहीं गए।

पिता ने चुपचाप किताब खोली कुछ पन्ने पढ़ेज़एक पन्ने पर रुक गए फिर एक औरज़और उनकी आंखें नम हो गईं।

किताब में एक कहानी थी, एक ऐसे पिता की जो अपने सपने मारकर बच्चों को पालता है, और एक ऐसे बेटे की जो उसी मारे हुए सपने को ज़िंदा करता है।उन्होंने पहली बार आलोक के कंधे पर हाथ रखा और कहा, मुझे तुम पर गर्व है, बेटा।

उनकी आवाज़ कांप रही थी। आलोक ने देखा कि पिता की आंखों में वो नमी थी जो शायद सालों से दबी हुई थी। शायद उसके पिता भी कभी कुछ सपने देखते थे। शायद वह भी कभी अपनी जिंदगी को जीना चाहते थे, लेकिन हालात ने मना कर दिया था।

आलोक के लिए यह पल किसी भी सफलता से कम नहीं था।

आज आलोक एक सफल लेखक है। उसकी किताबें बिकती हैं, उसकी बातें सुनी जाती हैं। लेकिन उससे भी बड़ी बात यह है कि वह खुश है, सच में खुश है। वह खुशी जो सफलता से नहीं, खुद से जीने से मिली थी।

एक शाम उसने रिया से कहा, तुमने मुझे मेरी जिंदगी दी है।

रिया मुस्कुराई और बोली, नहीं आलोक, तुमने खुद अपनी जिंदगी चुनी है। मैंने तो सिर्फ एक आईना दिखाया था। तुमने खुद अपनी जिंदगी को जीना सीख लिया है।

आलोक ने आसमान की ओर देखा तारे चमक रहे थे। उसी तरह जैसे बचपन में देखा करता था। अब उसे कोई डर नहीं था। ना गिरने का, ना अकेले चलने का, ना दुनिया की बातों का। क्योंकि उसने समझ लिया था, जिंदगी किसी और के फैसलों से नहीं, अपने साहस से लड़ी जाती है। सपने देखना कोई पागलपन नहीं है। पागलपन तो यह है कि सपने देखकर भी उन्हें पूरा न करने दिया जाय।

उस दिन से उसका नजरिया बदल गया था। अब वह समझ आ गया था कि जिंदगी की सार्थकता दूसरों की कहानी का हिस्सा बनने में नहीं, बल्कि अपनी नियति का लेखक स्वयं बनने में है।

लघुकथा

रोग और शोक

रामेश्वरम तिवारी

मृत्यु लोक के सम्राट ने एक दिन सभा में उपस्थित अपने सबसे बुद्धिमान मंत्री से कहा- 'मंत्री महोदय, मैं अजर-अमर होना चाहता हूँ। उसके लिए मुझे क्या करना होगा। अगर आपके पास कोई युक्ति हो बताइएज!' मंत्री के माथे पर बल पड़े, उसकी भौंहें तनी, अपना सिर खुजाया और गुरु गंभीर वाणी में बोला- 'राजन! मैंने शास्त्रों में संजीवनी बूँटी के बारे में पढ़ा भर है। उसके अलावा आजतक कोई ऐसी औषधि नहीं बनी है कि जिसका सेवन कर दुनिया का कोई व्यक्ति अजर-अमर हुआ है। पर हाँ! पोथियों में ज़रूर पढ़ा है कि ब्रह्मदेव की तपस्या कर उनसे अजर-अमर होने का वरदान प्राप्त किया जा सकता है!'

राजा के मन में अजर-अमर होने की बात इस क़दर बैठ गई कि उसने ब्रह्मदेव को प्रसन्न करने लिए पहले महीने धीरे-धीरे अन्न का परित्याग किया और फिर एक दिन ऐसा आया कि पानी तक का त्याग कर हवा फाँकने लग गया।

संसार के पहले संवाददाता महर्षि नारद को जब इस बात का पता चला कि मृत्यु लोक का राजा उनके पिता ब्रह्मदेव की घोर तपस्या कर रहा है, तो वे तत्काल ब्रह्मलोक पहुँचे और अपने पिताश्री को मृत्यु लोक के राजा की तपस्या के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। ब्रह्मदेव अपने भक्त की कठोर तपस्या के बारे में सुनकर अविलंब मृत्यु लोक पहुँचे और भक्त से बोले- 'भक्त! मैं तुम्हारी तपस्या से अति प्रसन्न हूँ, बोलो तुम्हें क्या वरदान चाहिए!'

तपस्या के कारण तन से दुर्बल हो चुके राजा ने अपनी बंद आँखें खोली और ब्रह्मदेव के समक्ष नतमस्तक होते हुए बोला- 'देव! मुझे अजर-अमर होने का वरदान दीजिए ताकि मैं सदा के लिए नृत्य लोक पर शासन और भोगी और विलासी का जीवन जी सकूँ!' ब्रह्मदेव ने कहा- देखो, राजन! मैं तुम्हें यह वरदान देने को, तो दे सकता हूँ, पर इस बात की कोई गारंटी नहीं कि तुम्हारा जीवन रोग और शोक से मुक्त रहेगा। अतः मैं तुम्हें वरदान के बारे में पुनर्विचार का मौक़ा दे रहा हूँ। तुम्हारे जवाब का इंतज़ार करूँगा। और हाँ! तुम्हारा यह अजर-अमर होने का वरदान मेरे पास देय के रूप में शेष है। तुम जब चाहो अपना वरदान प्राप्त कर सकते हो।' इतना कहकर पलक झपकते ब्रह्मदेव अंतर्ध्यान हो गए। और इधर अगले दिन से ही राजा को असाध्य रोगों और अपने प्रिय युवा पुत्र के वियोग के शोक ने ऐसा घेरा कि बेचारे के सिर से अजर-अमर होने का भूत हमेशा के लिए उतर गया।

पुस्तक चर्चा

भावेश कानूनगो

समीक्षक

टनल: हिमालय को नए नज़रिए से देखने की पैरवी

वरिष्ठ उपन्यासकार सुनील चतुर्वेदी का नया उपन्यास 'टनल' हमें यह सोचने के लिए प्रेरित करता है कि किस प्रकार हमने विकास के नाम पर हिमालय को कंक्रीट का जंगल बनाने की ज़िद में उसे कितनी गहरी क्षति पहुँचाई है। और तमाम चेतावनियों के बावजूद हम यह अपराध करते ही जा रहे, हिमालय को ख़त्म करने पर आमादा हैं।

उपन्यास उत्तराखंड के सिल्क्यारा गाँव की पृष्ठभूमि पर आधारित है, जहाँ चारधाम परियोजना के अंतर्गत एक टनल का निर्माण किया जा रहा है। पहाड़ दरकने से इसी टनल में कई मज़दूर फँस गए, जिन्हें बचाने के लिए जीतोड़ मशक्कत के बाद अंततः सभी मज़दूरों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया।

यह उपन्यास केवल सिल्क्यारा में हुए टनल हादसे तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उसकी पृष्ठभूमि में अनेक पहलुओं को समेटते हुए तमाम पर्यावरण के मुद्दों पर सोचने के लिए मज़बूर करता है, जिन्हें हम अक्सर अनदेखा कर देते हैं। मैं स्वयं कई बार धार्मिक यात्रा के उद्देश्य से उत्तराखंड जा चुका हूँ। हर बार मैं बड़े हर्ष के साथ यह कहता था कि हमारे हिमालय में कितनी अच्छी योजनाएँ चल रही हैं। पहाड़ों पर सरपट दौड़ती गाड़ियाँ, बाइक पर वीकेंड मनाते नौजवान और रेस लगाते लोग। इन सबको देखते हुए मैं शायद उस पहलू को भूल चुका था, जो पहाड़ों को विनाश की ओर ले जा रहा है। चारधाम यात्रा के दौरान पहाड़ों से धसकते पहाड़ों से गिरता मलबा मुझे थोड़ा चिंतित तो करता था, लेकिन मैं उसे विकास में आ रही छोटी-मोटी बाधाओं के रूप में ही देखता रहा।

लेकिन जब मैंने 'टनल' पढ़ा, तो मेरी कई गलतफहमियाँ दूर हो गईं।

सिर्फ़ सवालों पर ही नहीं लेखक इसे कालक्रम में पीछे ले जाते हुए हिमालय के लिए संघर्ष करने वाले उन अनाम योद्धाओं की कहानी भी सुनाते हैं, जो इसे बचाने के लिए अपने प्राणों की आहुति तक दे चुके हैं।

'टनल' पाठक को हर क्षण बाँधे रखता है। कब यह टनल में फँसे मज़दूरों की कहानी से निकलकर लोककथाओं, पहाड़ी जीवन की त्रासदियों, और पर्यावरण के लिए घातक जीवनशैली की ओर ले जाता है, इसका पता ही नहीं चलता।

उपन्यास में उत्तराखंड में वृक्षों को बचाने के लिए हुए आंदोलनों का भी उल्लेख है। किस प्रकार महिलाओं और पुरुषों ने पेड़ों को बचाने के लिए संघर्ष किया, जिसके कारण वहाँ की सरकार को झुकना पड़ा।

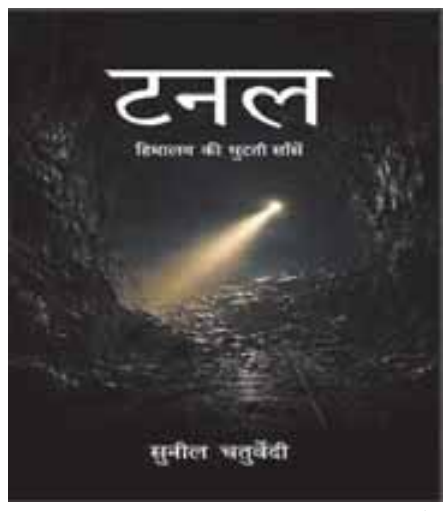

लेखक ने कुमाऊँ क्षेत्र में हुए 'चिपको आंदोलन' और 'टिहरी आंदोलन' की स्मृतियों को भी जीवंत किया है। सुन्दरलाल बहुगुणा, विमला बहुगुणा, गौरा देवी, मंगसिरी देवी, चंडी प्रसाद भट्ट और घनश्याम सैलानी जैसे अनेक नायकों को याद किया गया है, जिन्होंने हिमालय को बचाने के लिए जन-आंदोलन खड़े किए और सरकार को समय-समय पर कागज़ी ही सही पर पर्यावरण-हितैषी निर्णय लेने के लिए मजबूर किया।

उपन्यास में एक बूढ़े बाबा के माध्यम से टनल दुर्घटना की कथा जिस रोचक ढंग से प्रस्तुत की गई है, वह बहुत प्रभावशाली है। इसमें चित्रण इतना सजीव है कि मानो वह हमारे सामने बैठकर पूरी घटना सुना रहे हों। हम हर उस पात्र से स्वयं को जुड़ा हुआ पाते हैं, जो टनल के भीतर फँसा था या बाहर अपने प्रियजनों का इंतज़ार कर रहा था।

ऑक्सीजन की कमी, रसद पहुँचाने की जद्दोजहद और बाहर बैठे परिजनों की बेबसी इन सभी स्थितियों को लेखक ने इतनी सजीवता से चित्रित किया है कि पाठक उन्हें गहराई से महसूस करता है। गाँव से लेकर दिल्ली तक की व्यवस्था और उसके बाद की स्थिति को भी यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया गया है।

उपन्यास में 'गनी' नाम का एक पात्र है, जो अपनी बेटी मुनकी को याद करता है, जिसके पेट में गाँठ है और जिसका इलाज कराना है। इस संदर्भ में लेखक लिखते हैं--÷सुरंग का काम पूरा कर लौटेगा तो सबसे पहले मज़दूरी के पैसे से मुनकी का ऑपरेशन कराएगा। उसे लगता है कि मुनकी उसके पास ही है और वह उसे ढूँढ़ने लगता है।÷ यह प्रसंग पाठक को भावुक कर देता है। ऐसी कई जगहें हैं, जो दिल को छूकर भीतर तक झकझोर देती हैं।

सुनील चतुर्वेदी मालवा के निवासी होते हुए भी उपन्यास में उत्तराखंड की बोली और उसके लोकगायन की मधुर झलक प्रस्तुत करते हैं। 'टनल' पाठक को पूरी तरह बाँधे रखने में सफल रहता है। उत्तराखंड में हुए अनेक हादसे चाहे केदारनाथ का महाप्रलय हो, खीरगंगा की त्रासदी हो या जोशीमठ में ज़मीन धँसने की घटनाएँ ये सभी हमें स्पष्ट चेताती हैं कि अभी भी समय है, संभल जाएँ। परंतु प्रश्न यह है कि क्या हम सच में संभल रहे हैं? आज भी हम मानो नए हादसों का इंतज़ार ही कर रहे हैं।

मुझे लगता है कि 'टनल' केवल एक उपन्यास नहीं, बल्कि चेतावनी है, एक ऐसा आईना; जिसमें हम अपने विकास की अंधी दौड़ और उसके परिणामों को साफ़-साफ़ देख सकते हैं। यह हमें सोचने पर विवश करता है कि क्या हम सचमुच प्रगति कर रहे हैं, या अपने ही अस्तित्व की नींव को कमजोर कर रहे हैं।

हिमालय केवल पर्वतों का समूह नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, आस्था और जीवन का आधार है। यदि हम आज भी नहीं चेते, तो आने वाली पीढ़ियाँ हमें कभी माफ़ नहीं करेंगी। सवाल यह है, क्या हम समय रहते संभलेंगे, या फिर किसी अगले हादसे का इंतज़ार करते रहेंगे?

उपन्यास- टनल
लेखक: सुनील चतुर्वेदी
क़ीमत: 225 रुपए
प्रकाशन: संभावना प्रकाशन, हापुड़

लघुकथा

ऑनलाइन फ्रॉड

प्रगति त्रिपाठी

सुबह-सुबह मोबाइल पर मैसेज आया। बधाई हो! आप पचास हजार जीत गई हैं। अपने ईनाम की राशि लेने के लिए इस नंबर पर कॉल करें और कुछ जरूरी डिलेट जैसे - आपका नाम, अपने खाते का नंबर, और एड्रेस, इस मेल आईडी पर भेज दीजिए।, मैसेज पढ़कर गरिमा खुशी से उछल पड़ी और मम्मी को बताया कि वो पचास हजार रुपए जीत गई हैं।

अरे वाह! कब मिलेगा? रमा जी उतावली होते हुए बोली।

उन लोगों ने कुछ डिटेल मांगे हैं। वो भेजना पड़ेगा फिर पैसा मिल जाएगा। गरिमा बोली।

हां तो भेज दे ना! सोच क्या रही है? रमा जी बोली।

मां मैं ये सोच रही हूं कि मैंने कभी कोई ऐसा कॉंटेस्ट खेला ही नहीं फिर मुझे कोई कंपनी इतने सारे पैसे क्यों देगी? गरिमा ने सोचते हुए कहा।

गरिमा ने धैर्य के साथ सारी बातें पापा को भी बताई तो पापा ने कहा बेटा! ये देख आज के न्यूज पेपर में ऐसा ही न्यूज आया है। ये सब फ्रॉड कंपनियां ऐसे ही मैसेज भेजकर कस्टमर से उनके बैंक के सारे डिटेल लेकर उनको लूटने का काम कर रही है। इस तरह का कोई भी मैसेज आए तो रिप्लाई मत करना।

ओह! अच्छा हुआ जो मैंने उस नंबर पर कोई डिटेल नहीं भेजा। चैन की सांस लेते हुए गरिमा ने कहा।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पंकज प्रिंटर्स एंड पैकेजिंग, 16, अल्फा इंडस्ट्रीयल पार्क, जाखिया, इंदौर, म.प्र.- 453555 से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।
प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

दिनेश विजयवर्गीय

लेखक व्यंग्यकार हैं।

नेताजी के लिए साहित्यकार के चुनावी नारे

साहित्यकार श्रीजी सुबह नाश्ता और चाय लेकर अपनी कहानी को फाइनल टच दे रहे थे। तभी दो युवक आए और कहने लगे सर ! आपका साहित्य में बड़ा नाम सुनकर हम आपके पास आए हैं। बोलिए कैसे आना हुआ ? वह बोले हमारे नेताजी को विधानसभा चुनाव के लिए बड़ी लोकप्रिय पार्टी ने टिकट दिया है । नेताजी की इच्छा है कि दिल को छूने वाले आकर्षक दस नारे लिख कर सहयोग प्रदान करें। श्रीजी ने कहा इससे मुझे क्या फायदा होगा? सर! आपको एक नारा लेखन पर पांच सौ रुपये तक मिलने की संभावना है। बस नारों में नये पन का आकर्षण हो और सहज भाषा में लिखे हों। इतना कह वह दो दिन बाद आने को कह चले गए । श्रीजी ने लिखना पढ़ना छोड़ नेताजी के लिए मौलिक नारे लिखने के लिए आजकल की राजनीति माहौल को समझते हुए गहरा चिंतन किया । उन्होंने दस आकर्षक नारे मन को कमल के फूल की तरह खिलाने वाले लिखकर तैयार कर लिये।

दोनों युवक तीन दिन बाद आये। उन्होंने कहा सर ! नारे तैयार हो गए हों तो देदें । नेताजी ने आज ही बैनर और पेंफलेट में इन्हें प्रिंट करवा रहे हैं। श्रीजी ने उन्हें कागज में लिखे नारे बताएं । नारों को देख खुश हो कर बोले सर ! सच में आपने नारे इतने बेहतरीन और जन मन पर प्रभाव छोड़ने वाले बनाए हैं कि नेताजी की जीत निश्चित होगी।

इतना कह वह नारे लिखे कागज को लेकर जाने लगे। श्रीजी ने कहा इनका मेहनताना तो दीजिए ? उनमें से एक जना बोला नेताजी का काम है, चुनाव के बाद सबका हिसाब कर देंगे । एक बार जीत जाने दो। वे इतना कह चलते बने । श्रीजी हाथ मलते उन्हें दूर तक जाते हुए देखते रहे।

कुछ दिनों बाद चुनाव हुए। नेताजी विजय प्राप्त कर विधायक बन गए और उनकी पार्टी की सरकार बन गई। पर नारे लिखाने वाले लड़के आए नहीं । श्रीजी की सारी दिमागी मेहनत पर पानी फिर गया । एक दिन श्रीजी अपनी पत्नी जो पिछले दस वर्ष से ग्रामीण अंचल में शिक्षिका है, उसका ट्रांसफर शहर में करवाने के लिए विधायक जी के पास गये। विधायक निवास पर मिलने वालों की भीड़ लगी थी। एक घंटे के बाद उनसे मिलने का नंबर आया। उनके रूम के बाहर वह दोनों युवक भी बैठे हुए थे जो नारे लिखाने आए थे। मुझे देख बोले क्या पैसे लेने आए हो क्या? अब नेताजी किसी को भी पैसा नहीं दे रहे। कोई काम हो तो बता दें। श्रीजी ने पत्नी के शहर में ट्रांसफर करवाने वाली बात कही । वे उन्हें नेताजी के पास ले गए। उन्होंने नेताजी से कहा सर, यह वही साहित्यकार श्रीजी हैं जिन्होंने आपकी जीत के लिए नारे लिखे थे। नेताजी ने पूछा कोई काम हो तो बोलो? श्रीजी ने पत्नी का ग्रामीण अंचल से शहर में ट्रांसफर कर वाने की बात कही। उन्होंने तुरंत जिला शिक्षा अधिकारी को ट्रांसफर के लिए पत्र लिख दिया।

श्रीजी खुश होते घर लौट आये और पत्नी से कहा लो आज तो हलवा खिला दो ,तुम्हारा काम होने वाला है । यह देखो विधायक जी ने तुम्हारे ट्रांसफर के लिए जिला शिक्षा अधिकारी को पत्र लिखा है । पत्नी भी खुश हो गई , आपके नारे लेखन से ही यह संभव हुआ है ।

दूसरे दिन श्रीजी जिला शिक्षा अधिकारी के पास गये । उन्हें विधायक जी का पत्र देते हुए पत्नी का शहर में ट्रांसफर कराने वाली बात कही ।

जिला शिक्षा अधिकारी ने कागज हाथ में लिया और मुस्कुराकर तीन और सिफारिशी पत्र टेबल की रैंक से निकालकर उन्हें बताएं । देखिए यह भी शहर में आना चाहते हैं । वह उनकी बात सुन निराश होता लौट आये।

श्रीजी शाम को विधायक जी के पास गये । जिला शिक्षा अधिकार से जो बात हुई वह उन्हें बतादी। नेताजी ने कहा मैं विधायक हूं, सबकी सुविधा का ध्यान रखना होता है। दूसरों के लिए भी रिकमंड करना पड़ता है। अब यह तुम्हारे भाग्य पर है कि ट्रांसफर होगा या नहीं। मैंने अपना काम कर दिया। श्रीजी दुखी मन से घर लौटने लगे । अब उनके लिखे नारे आंखों के सामने आते जा रहे थे।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

भारतीय कला, संस्कृति एवं कथा चित्रण

कला एवं साहित्य के आपसी मेल मिलाप का असर कहें या एक दूसरे में खो जाने की मानसिकता का प्रतिफल पर सच्चाई यही है कि तब कृतियों से लोगों का जुड़ाव ज्यादा हो पाता था। कृतियों के साथ पूरा कथानक जुड़ा होता था। धार्मिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि कोई सी भी रही हो पर कलाकार उसके कथानक को आत्मसात करने के बाद ही अपने सृजन में जुटता था। कृतियों में देवांगना, शालभंजिका, प्रेक्षणिका, मातृदेवी, सिंह, या फिर ऐसे ही तमाम और भी उत्कीर्ण या फिर अंकित आकृतियां भारतीय कला के समृद्धि की कारण रही हैं। किसी विचार या भाव को दृश्य रूप प्रदान करना ही कला का मुख्य कार्य रहा है कथा चित्रण भी इसी का विस्तारित रूप है। कथा चित्रण और संस्कृति पर चर्चा के पूर्व संस्कृति पर दृष्टिपात बहुत जरूरी है। संस्कृति समाज का एक अभिन्न अंग है जिससे समाज और भी निखर कर परिष्कृत होता है।

कला में भारतीयता की जब भी बात आती है कथा चित्रण और संस्कृति पर भी विचार किया जाता है, कला संबंधी अभिप्राय और अलंकरणों पर भी बात करनी होती है। भरहुत, बोधगया से लेकर कोणार्क, सांची, सारनाथ, मथुरा, अजंता, एलोरा या फिर खजुराहो तक में कथा चित्रण के साथ ही अभिप्राय और अलंकरणों की अधिकता है जो संपन्नता को दर्शाती है हालांकि कहीं कहीं अलंकरण की अधिकता बोझिल सी बन पड़ी है पर ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर हम बात करें तो प्राचीन ग्रंथों पर गजब की पकड़ होती थी कलाकारों की फलतः हम कह सकते हैं कि तब कलाकार अभ्यास के साथ ही अध्ययन भी खूब किया करते थे। कला एवं साहित्य के आपसी मेल मिलाप का असर कहें या एक दूसरे में खो जाने की मानसिकता का प्रतिफल पर सच्चाई यही है कि तब कृतियों से लोगों का जुड़ाव ज्यादा हो पाता था। कृतियों के साथ पूरा कथानक जुड़ा होता था। धार्मिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि कोई सी भी रही हो पर कलाकार उसके कथानक को आत्मसात करने के बाद ही अपने सृजन में जुटता था। कृतियों में देवांगना, शालभंजिका, प्रेक्षणिका, मातृदेवी, सिंह, या फिर ऐसे ही तमाम और भी उत्कीर्ण या फिर अंकित आकृतियां भारतीय कला के समृद्धि की कारण रही हैं। किसी विचार या भाव को दृश्य रूप प्रदान करना ही कला का मुख्य कार्य रहा है कथा चित्रण भी इसी का विस्तारित रूप है। कथा चित्रण और संस्कृति पर चर्चा के पूर्व संस्कृति पर दृष्टिपात बहुत जरूरी है। संस्कृति समाज का एक अभिन्न अंग है जिससे समाज और भी निखर कर परिष्कृत होता है। संस्कृति ही है जो समाज को पीढ़ी दर पीढ़ी निखरने के मार्ग प्रशस्त करती है तथा अच्छे व बुरे को विलग करने की विलक्षण शक्ति प्रदान करती है। कला और संस्कृति यदि अपभ्रंशित हो गयी तो समाज खोखला हो जाता है, रीढ़ विहीन हो जाता है, अतः हमें अपनी संस्कृति को बचाकर, संवार कर तथा परिष्कृत रूप में सुधार कर हमेशा आने वाली पीढ़ी को सौंपना चाहिए ताकि ऐसे ही कुछ सुधार कर वो अपने आगे की पीढ़ी को दे सकें। संस्कृति को बचाने का कार्य करती है कला या दूसरे शब्दों में कहें तो कथा चित्रण भी। कला में ही लोक के सांस्कृतिक परिवेश, परंपरा की विस्तारित व्याख्या होती है। खाली दीवारों को अशुभ मानने की परंपरा भी भारत मे रही है। सांस्कृतिक, मांगलिक आदि शुभ आयोजनों में अलंकृत, विवरणात्मक आदि कृतियों का सृजन और ऐसे मौकों पर सभी का कलाकार बन जाना और दर्शकों का स्वतः जुड़ाव हो जाना भारतीय कला की थाती रही है जो लोक संस्कृतियों के माध्यम से आज भी जिंदा है।

संस्कृति सामाजिक विकाश को प्रेरणा प्रदान करती है। संस्कृति के चर्चा पर के. एम. मुंशी के बोल- हमारे रहन-सहन के पीछे जो मानसिक अवस्था, मानसिक प्रवृत्ति है, जिसका उद्देश्य हमारे जीवन को परिष्कृत, शुद्ध और पवित्र बनाना है तथा अपने लक्ष्य की प्राप्ति करना है, वही संस्कृति है। रही बात भारतीय कला में संस्कृति की तो झुठलाया नही जा सकता कि प्रागऐतिहासिक से लेकर आज तक हमारे यहां के हर कला में संस्कृति की झलक बेशुमार प्रवाहित है।

कथा चित्रण और संस्कृति के विषय में यह विदित है कि रामायण, महाभारत, गीतगोविंद, बालगोपाल तमाम पर आधारित चित्र पाये गये। अजन्ता, बाघ, जोगीमारा आदि में अधिकतर चित्र किसी न किसी घटना पर ही आधारित है जहां पर चित्रों के साथ ही घटना का भी जिक्र किया गया है। इलेस्ट्रेशन भाषाओं के डोर में नही बंधा है बल्कि किसी भी देश, दुनिया, धर्म के लोग इसे आसानी से समझ सकते हैं और समझ कर अपने कर्तव्य को समाज के अनुकूल परिवर्तित कर सकते हैं।

जोगीमारा गुफा जिसे पहले एक देवदासी का निवास समझा गया था, हालांकि था नही, से प्राप्त शिलालेखानुसार- यह वरुण देवता का मन्दिर था और जैन धर्म का इसकी कला पर प्रभाव था, वरुण देवता के सेवा में ''सुतनुका'' नामक देवदासी रहती थी। इनसे सम्बन्धित कहानियों का चित्रण जोगीमारा में मिलता है। जोगीमारा में ही संभवतः पौराणिक गजग्रह कथा का चित्रण भी प्राप्त हुआ है। अजंता से स्तूप पूजा का जो चित्र प्राप्त हुआ है जिसमे लगभग सोलह व्यक्तियों का समूह दर्शाया गया है वह भी कथा पर ही आधारित है जहां किसी राजा अथवा श्रेष्ठी द्वारा चैत्य को बनवा कर संघ को भेंट देने के समारोह की घटना वर्णित है। गुफा संख्या दस के साम जातक का चित्र भी साम नामक व्यक्ति के अपने अंधे माता-पिता की सेवा पर आधारित है जो श्रवण कुमार के कहानी से पूर्णतः मेल खाती हुई सी है। 'मरणासन्न राजकुमारी' भी कथा पर ही आधारित है जिसको तपस्वी कलाकारों ने सजीवता के शिखर पर ला खड़ा किया था जिसके बारे में ग्रिफिक्स महोदय का मत- फ्लोरेंस का चित्रकार इससे अच्छा रेखांकन कर सकता था और वेनिस का कलाकार अच्छे रंग भर सकता था, किन्तु दोनो में से कोई इससे अधिक सुंदर भाव का प्रदर्शन नही कर सकता था। उन्ही के दूसरे शब्दों में- भावना, करुणा तथा कथा चातुर्य की दृष्टि से इससे बढ़कर कला इतिहास में कोई प्रमाण नही है। अजन्ता के लगभग सभी चित्र किसी न किसी घटना या कहानी पर ही आधारित है, मतलब कथा चित्रण का ही एक रूप है अजन्ता। पाल शैली में भी साधनमाला, गन्धव्यूह, करनदेवगुहा, पंचशिखा जैसी पोथियां प्राप्त हुई हैं जो कथा चित्रण युक्त हैं। गुजरात में बसंत बिलास नामक दृष्टांक चित्रण प्राप्त होता है जो कालीदास की रचना ऋतुसंहार पर आधारित है जिसमे विशेषतः फाल्गुन मास का मोहक चित्रांकन हुआ है, कविराज विल्हण और उनकी प्रेयसी चम्पावती की प्रणयलीला का चित्रांकन विल्हण कृत चौर पंचाशिका में अंकित है। मार्कण्डेय पुराण, दुर्गाशप्तसती, रतिरहस्य, कामसूत्र सम्बन्धी चित्र जैन कलाकारों द्वारा निर्मित किये गये। अगर देखा जाय तो रतिरहस्य, दुर्गाशप्तसती, बालगोपालस्तुति आदि से सम्बन्धित शैली के चित्रों का निर्माण सातवीं शताब्दी से ही गुजरात, मारवाण में होने लगा था। मुगल कालीन चित्रावलियों में हम्जानामा भी विशेष है जिसके चित्र सूती कपड़े पर बनाये गये थे। अकबरनामा भी कम महत्वपूर्ण नही है, अनवार-ए-सुहैली, रम्जानामा, आदि भी कथा चित्रण के इतिहास को बखूबी बयां करते से प्रतीत होते हैं। चित्र गूगल से साभार।

मुद्दा

बृजमोहन श्रीवास्तव

राष्ट्रीय महासचिव एवं मुख्य राष्ट्रीय प्रवक्ता राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी

महिला आरक्षण- नया आयाम, क्यूँ ज़रूरी?

आज देश में सबसे चर्चित विषय महिला आरक्षण है और इसका महत्व देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी के लेख से और अधिक हो गया है ।इसलिए यह ज़रूरी है कि इस आरक्षण के लिये हमारी तैयारी पर भी बात होना चाहिए ।

बात 1993-94 की है, जब मध्य प्रदेश में 73वें संविधान संशोधन के बाद पहली बार पंचायती राज संस्थाओं के चुनावों की घोषणा हुई। चूँकि ये चुनाव किसी राजनीतिक दल के चुनाव चिन्ह पर नहीं होने थे, इसलिए सभी नेता अपने-अपने समर्थित उम्मीदवारों को मैदान में उतारने की तैयारी में थे।

मैंने व भोपाल सेंट्रल कोऑपरेटिव बैंक के अध्यक्ष, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी अनिरूध प्रसाद शास्त्री जी ने यह निर्णय लिया कि हम भोपाल जिले की सभी पंचायतों व अन्य स्थानों में अपने प्रत्याशी खड़े करेंगे।

चुनाव की तैयारी के प्रथम चरण में जब महिला प्रत्याशियों की तलाश शुरू की तो हमें भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा क्योंकि संशोधन के कारण 33 प्रतिशत पद महिलाओं के लिये आरक्षित तो थे ही मगर उसमें भी पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के लिए भी आरक्षण निर्धारित था। इसके चलते योग्य और इच्छुक महिला उम्मीदवारों का मिलना कठिन था।

जनपद सदस्य के लिये एक वार्ड अनुसूचित जाति की महिला के लिए आरक्षित था। जब हमने उस वार्ड के लिए मतदाता सूची में महिला प्रत्याशी की तलाश शुरू की तो समझ आया कि चयन बहुत सीमित मतदाताओं में से ही करना पड़ेगा । तब हमें अपने एक समर्थक के खेत में काम करने वाली आठवीं पास युवा महिला–आशा मिली ।

जब हमने उस युवती के सामने चुनाव लड़ने का प्रस्ताव रखा उसने आश्चर्य के साथ बस इतना ही कहा जैसा भैय्या बोलें मगर उसका अगला सवाल था - रोज़ी रोटी का क्या होगा और करना क्या पड़ेगा ? हमने उसे बताया कि चुनाव में लोगों से वोट मांगना होगा और जीतने के बाद जनपद सदस्य के रूप में जनता के लिए काम करना होगा। वहीं मेरे समर्थक ने उसे नौकरी चलते रहे का आश्वासन दिया । अपने पति से बातचीत कर वह चुनाव के लिए तैयार हो गई । उसके नामांकन के बाद चुनाव प्रचार के दौरान मैंने उसे वोट माँगते समय उसमें आ रहे बदलाव को क़रीब से महसूस किया और इस बदलाव की छलक एक छोटी-सी आम सभा में देखी । हम सभी का मानना था कि वह भाषण नहीं देगी मगर उसने सबको ग़लत साबित करते हुऐ भाषण दिया और ऐसा बोला कि देर तक तालियाँ बजती रहीं । उसने बहुत ही सरल, लेकिन आत्मविश्वास से भरे शब्दों में कहा– मैं इसी गाँव की बेटी हूँ। जब मैं यहाँ से निकलती थी, तो मेरे पैर मिट्टी में सन जाते थे। अगर मैं चुनाव जीती तो मेरी कोशिश होगी कि अब गाँव में किसी भी बेटी के पैर मिट्टी में नहीं सने। उसके ये शब्द वहाँ उपस्थित हर व्यक्ति के मन में गहराई तक उतर गए थे । मैंने उस कम शिक्षित, मजदूर आशा को आशा देवी बनने की यात्रा को क़रीब से देखा । मैं एक साधारण महिला को राजनेता बनते देख रहा था और यह इसलिए हो रहा था क्योंकि मुक़ाबले में महिलायें ही थी। वह चुनाव तो हार गई मगर चुनाव लड़ने से उसमें जो आत्मविश्वास पैदा हुआ उसने एक महिला नेत्री को जन्म दिया ।वह इससे आगे के चुनाव लड़ने की ख्वाहिश होने के बावजूद भी पिछड़ गई, मैं आज जब पूरे हालात का विश्लेषण करता हूँ तो मुझे लगता है कि यदि उसे पुरुष नेताओं के साथ संघर्ष नहीं करना होता तो शायद वह आज कम से कम जिला स्तर पर तो काम कर रही होती ।

यह एक महिला के नेता बनने और फिर गुमनाम होने की कहानी नहीं है बल्कि प्रतिभा, संकल्प और उर्जा से भरीं लाखों महिलाओं की बात है । पिछले तीस-पैंतीस सालों में जब से महिला सशक्तिकरण के लिये लोकसभा-विधानसभा में महिला आरक्षण की माँग उठी है तब लेकर अब तक सार्वजनिक क्षेत्र की कई संस्थायें जैसे स्थानीय निकायों, पंचायती राज संस्थाओं, सहकारिता , कारपोरेट, कानूनी संस्थाएं और अन्य संगठनों में महिलाओं को जो आरक्षण मिला, उसने देश की राजनीति में महिलाओं की भागीदारी को एक नई दिशा दी है।

महिला आरक्षण के कारण लाखों महिलाओं ने विभिन्न पदों पर काम करके प्रशासनिक व चुनावी अनुभव प्राप्त कर लिया है ।आज देश का कोई ऐसा सार्वजनिक मंच नहीं है जहाँ महिलाएँ नेतृत्व नहीं कर रही हो ।

जिस चुनाव का मैंने ज़िक्र किया है उसे बीते लगभग पैंतीस वर्ष बीत चुके हैं मगर आज जब पीछे मुड़कर देखता हूँ विश्वास से भर जाता हूँ कि हमारी आबादी का पचास प्रतिशत अब क़ानून बनाने के लिये पूरी तौर से तैयार है, इसलिए इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिये अन्तिम कदम उठाने में देरी करना ठीक नहीं हैं क्योंकि आज देश की महिलाएँ न केवल जागरूक हैं, बल्कि राजनीतिक रूप से परिपक्व भी हो चुकी हैं। ऐसे में यह स्वाभाविक है कि उन्हें देश के सर्वोच्च नीति-निर्माण मंचों पर कानून बनाने का भी समान अवसर मिलना चाहिए।

सालों की लंबी बहस के बाद आखिरकार वह ऐतिहासिक क्षण सितंबर 2023 में आया जब हमारी संसद ने लम्बी सार्थक बहस के बाद 106वें संविधान संशोधन को मंजूरी देते हुए महिला आरक्षण विधेयक पारित किया । इस कानून के तहत अब लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में 33 प्रतिशत आरक्षण सुनिश्चित किया गया है।

हम सब जानते है कि आज तक देश में बने क़ानूनों मे पुरुषों की भागीदारी अधिक रही है फलस्वरूप क़ानूनों में पुरुष सोच का वर्चस्व रहा है जो कि स्वाभाविक है। यही कारण रहा कि महिलाओं से जुड़े कई महत्वपूर्ण कानून समय पर नहीं बन सके। इसके चलते हमारे लोकतंत्र में अनेक ऐसी योग्य महिलाओं अवसरों से वंचित रह गई , जो उत्कृष्ट नेतृत्व दे सकती थीं ।

अब यह कानून उस ऐतिहासिक कमी को दूर करने की दिशा में एक निर्णायक कदम है। इसके माध्यम से महिलाओं को यह संवैधानिक अधिकार मिलेगा कि वे उन सीटों से चुनाव लड़ सकें, जो उनके लिए आरक्षित होंगी। इससे न केवल महिलाओं की भागीदारी बढ़ेगी, बल्कि देश के लोकतंत्र में एक नई ऊर्जा और संतुलन स्थापित होगा ।

देश में एनडीए सरकार के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी लगातार इस बात पर बल देते रहे हैं कि महिलाओं को आरक्षण बहुत पहले मिल जाना चाहिए था मगर उनका स्पष्ट मानना है कि इसमें और देरी स्वीकार नहीं है । उन्होंने नारी शक्ति को लोकतंत्र में पूर्ण अवसर देने का संकल्प लेते हुए हर हाल में इस विधेयक को लागू करने की प्रतिबद्धता समय समय पर व्यक्त की है।

यही कारण है कि अब यह विश्वास मजबूत होता जा रहा है कि वर्ष 2029 के लोकसभा चुनावों में हम 33 प्रतिशत आरक्षण के कारण बड़ी संख्या में महिलाओं को संसद में देख सकेंगे।

यह सत्य है कि यह संशोधन जनगणना और परिसीमन की प्रक्रिया से जुड़ा हुआ है, लेकिन जिस दृढ़ता और प्रतिबद्धता के साथ इस दिशा में प्रयास हो रहे हैं, उससे यह स्पष्ट है कि अब वह दिन दूर नहीं जब भारत की महिलाएँ संसद में बैठकर देश के कानून निर्माण में निर्णायक भूमिका निभाएँगी।

यह केवल एक राजनीतिक परिवर्तन नहीं होगा, बल्कि यह भारत के लोकतंत्र में समानता, प्रतिनिधित्व और सामाजिक न्याय के एक नए युग की शुरुआत होगी । इस में राजनीति देखने वाले लोगों को खुद से यह प्रश्न करना चाहिए कि ऐसा करके वह लोकतंत्र को मजबूत करने की ओर अग्रसर देश की गति को धीमा क्यूँ करना चाहते है ?

वेब सीरीज समीक्षा

आदित्य दुबे

लेखक वेबसाइट ई- अंतर्भव के प्रबन्ध संचालक हैं ।

कप्तान- ईमानदार पुलिस अधिकारी की संघर्ष कथा

कहानी का जहाँ तक सवाल है यह एक ईमानदार पुलिसवाले की अपराध से भरे शहर में तैनाती और अपराधियों से उनके जूझने की कहानी है । सिरीज़ में ईमानदार पुलिस अधिकारी की भूमिका साकिब सलीम ने निभाई है । वो अवैध शराब के व्यापार और ज़मीन हड़पने में शामिल दो प्रतिद्वंद्वी गिरोहों से भिड़ता है । जैसे-जैसे वह मामले की तह तक जाता है, छिपे हुए मकसद उसके मिशन को और भी जटिल बना देते हैं ।अपराध में डूबे शहर ज्वालाबाद में ईमानदार पुलिसवाला अवैध शराब व्यापार और ज़मीन हड़पने में शामिल माफिया समूहों से तो लड़ता ही है, साथ ही सत्ता संघर्ष और व्यक्तिगत संघर्ष जैसे विषयों से भी निपटता है । सिरीज़ का परिवेश बिल्कुल सही है, और ज़्यादातर कलाकार अपनी भूमिकाओं में बखूबी ढले हैं । दो गिरोहों की दुश्मनी और उनके अपराध के जटिल जाल को एक ऐसी कहानी में बड़ी खूबसूरती से बुना गया है जो एक सख्त पुलिसवाले की कार्रवाइयों पर केंद्रित रहती है ।

वेब सीरीज - कप्तान , एक क्राइम थ्रिलर है जो अपनी तेज़ रफ़्तार और उतार-चढ़ाव भरी कहानी के कारण आपको बाँधे रखती है। इसमें कुछ कमियां ज़रूर हैं लेकिन इसके बावजूद इस सिरीज़ को देखना रोमांचक अनुभव साबित होगा । यह सिरीज़ अपराध, पावर पॉलिटिक्स और पुलिस-गैंगस्टर टकराव की एक पुख्ता और सघन कहानी पेश करती है ।सिरीज़ में हाई-ऑक्टेन एक्शन सीक्वेंस हैं, जो दर्शकों को बाँधे रखते हैं। जतिन वागले द्वारा निर्देशित, यह सिरीज़ बहुत तेज़ रफ़्तार है, हालांकि कुछ जगहों पर यह अटकती-सी लगती है। इस सिरीज में पावर, पॉलिटिक्स और पुलिस महकमे की अंदरुनी चीजों को दिखाने की कोशिश भी की गई है। पुलिस और अपराधियों के बीच टकराव और गैंगवार को भी दिखाया गया है।इस सिरीज में पावर, पॉलिटिक्स और पुलिस महकमे की अंदरुनी चीजों को दिखाने की कोशिश भी की गई है। पुलिस और अपराधियों के बीच टकराव और गैंगवार को भी दिखाया गया है।

कहानी का जहाँ तक सवाल है यह एक ईमानदार पुलिसवाले की अपराध से भरे शहर में तैनाती और अपराधियों से उनके जूझने की कहानी है । सिरीज़ में ईमानदार पुलिस अधिकारी की भूमिका साकिब स?लीम ने निभाई है । वो अवैध शराब के व्यापार और ज़मीन हड़पने में शामिल दो प्रतिद्वंद्वी गिरोहों से भिड़ता है। जैसे-जैसे वह मामले की तह तक जाता है, छिपे हुए मकसद उसके मिशन को और भी जटिल बना देते हैं।अपराध में डूबे शहर ज्वालाबाद में यह ईमानदार पुलिसवाला अवैध शराब व्यापार और ज़मीन हड़पने में शामिल माफिया समूहों से तो लड़ता ही है, साथ ही सत्ता संघर्ष और व्यक्तिगत संघर्ष जैसे विषयों से भी निपटता है। सिरीज़ का परिवेश बिल्कुल सही है, और ज़्यादातर कलाकार अपनी भूमिकाओं में बखूबी ढले हैं। दो गिरोहों की दुश्मनी और उनके अपराध के जटिल जाल को एक ऐसी कहानी में बड़ी खूबसूरती से बुना गया है जो एक सख्त पुलिसवाले की कार्रवाइयों पर केंद्रित रहती है। तेज़ रफ़्तार, साथ ही नियमित मोड़, इसे एक बार देखने लायक तो बनाते ही हैं।

एसएसपी समरदीप सिंह के रूप में साकिब सलीम ने शानदार अभिनय किया है और एक सख्त पुलिस अधिकारी की भूमिका में वे सहजता से ढल गए हैं। अपने करीबी लोगों को खोने के कारण इस चरित्र में भावनात्मक गहराई भी है, जिसे शो धीरे-धीरे उजागर किया गया है। गैंगस्टर मुन्ना के रूप में अंजुम शर्मा ने दमदार और विश्वसनीय प्रदर्शन किया है। कबीर के रूप में सिद्धार्थ निगम का अभिनय भी प्रभावी है, हालांकि कभी-कभी वे थोड़ा अतिरंजित लगते हैं। एक और गैंगस्टर शाहीन के रूप में आरिफ जकारिया और स्थानीय नेता संगवान के रूप में वरुण बडोला ने सहायक भूमिकाएं निभाई हैं और अपने चरित्रों में विश्वसनीय प्रतीत होते हैं। कुल मिलाकर सभी कलाकारों ने एक साथ अच्छा काम किया है और श्रृंखला के प्रभाव को बढ़ाया है।क्षसिरीज में लोकप्रिय सीरियल 'एफआईआर' में इंस्पेक्टर चंद्रमुखी चौटाला का रोल निभाकर तारीफ बटोरने वाली एक्ट्रेस कविता कौशिक भी अहम रोल में नजर आई हैं। इस सिरीज में भी कविता ने खाकी वर्दी पहनी है। रह सिरीज गत 03 अप्रैल को ओटीटी प्लेटफॉर्म एमएक्स प्लेयर पर स्ट्रीम हुई है ।

हालांकि, सिरीज़ में कुछ कमियां भी हैं। कुछ कथानक बिन्दु प्रश्नचिह्न लगाते हैं और कमजोर ढंग से सोचे-समझे लगते हैं। एक दृश्य में, एसएसपी समरदीप अपने गुप्त मुखबिर राघव को कबीर से मिलवाते हैं, जबकि मुखबिर की पहचान गुप्त रखी जानी थी। इसके तुरन्त बाद, कबीर उसकी हत्या कर देता है, और एक तेजतर्रार और बुद्धिमान अधिकारी के रूप में दिखाए जाने के बावजूद, समरदीप यह पता लगाने में संघर्ष करते हैं कि इसके लिए कौन जिम्मेदार है। ऐसे क्षण अनुभव को कम कर देते हैं। फिर भी, ये कमियां शो को पूरी तरह से पटरी से नहीं उतारतीं।

दिलचस्प बात यह है कि मुख्य खलनायक की कहानी क्लाइमेक्स से काफी पहले ही खत्म हो जाती है, और आखिरी एपीसोड आगे की कहानी की रूपरेखा तैयार करने पर केंद्रित हैं। दमदार अभिनय के साथ यह एक तेज-तर्रार और मनोरंजक सीरीज है। यह पुलिस शैली में कोई नयापन नहीं लाती, लेकिन इसमें इतने नए तत्व जरूर हैं कि इसे देखना सार्थक हो जाता है।

गुरु पं. हरि प्रसाद चौरसिया की प्रतिछाया हैं विवेक सोनार

राजेन्द्रा शर्मा
(संगीत समीक्षक और पूर्व शासकीय अधिकारी)

किस्साद बीती सदी के आठवें दशक के उत्तरार्ध का है। महाराष्ट्र राज्य के जलगांव जिले का गांव चालीसगांव के सोनार परिवार के मुखिया इलाके के ख्यात भजन कीर्तनकार। इस नाते बड़े-बड़े कीर्तनकारों की घर में आवाजाही लगी रहती, जिन्हें आठ-दस साल का उनका बालक विवेक सोनार कौतूहल से छिप-छिप कर देखा करता। घुट्टी में मिले गाने-बजाने को चौथी कक्षा के छात्र विवेक को एक दिन पिता मेले में ले गये तो उस बालक ने एक बांसुरी लेने की इच्छा व्यक्त की। पिता ने बांसुरी दिला दी । विवेक का बांसुरी से यह पहला परिचय था और उसमें फूंक मारने पर आने वाली आवाज ने विवेक को इस कदर प्रभावित किया कि पूरे दिन वह बांसुरी में फूंक भर उसमें से आने वाली आवाज से आह्लादित रहता। हर बरस एक नई बांसुरी मेले से लाकर उसमें फूंक भरना विवेक का शकल हो गया। कीर्तनकार पिता बिना किसी तालीम के बेटे को बांसुरी बजाते देख मन ही मन प्रसन्न होते। पांच साल तक उसकी यह दीवानगी देख पिता ने फैसला किया कि वे बेटे को बांसुरी वादन की विधिवत तालीम गांव के ही बड़े बांसुरी वादक और मित्र पंडित पुरुषोतम अंतापूरकर से दिलाएंगे। पंडित अंतापूरकर बालक विवेक की बांसुरी के प्रति दीवानगी को बरसों से जान समझ रहे थे और इसी दिन की प्रतीक्षा में थे ।

पं.पुरुषोतम अंतापूरकर को अपने अनुभव की रोशनी में बालक विवेक में भविष्य का बड़ा बांसुरी उस्ताद दिखाई दे रहा था। तालीम के पहले चरण में उन्होंनें विवेक को आदेश दिया कि फिल्मी गानों का मेरे सामने नाम तक मत लेना, एक महीना शास्त्री य संगीत सुनो और गुनो। अगले छह माह तक पंडित अंतापूरकर रोजाना तीन से चार घंटे तक विवेक को सामने बैठाकर बांसुरी का रियाज करते और विवेक धैर्य के साथ इसे देखते रहते।

छह महीने तक गुरू के इस रियाज को सुनने गुनने के बाद गुरु पंडित पुरुषोतम अंतापूरकर ने शिष्य विवेक को बांसुरी को हाथ लगाने की अनुमति दी। छह महीने में बांसुरी वादन सुन विवेक इतने परिपक्व हो गये कि गुरुजी ने वर्ष 1994 में एक मंचीय प्रस्तुति में संगतकार के रुप में प्रिय शिष्य विवेक को पहला मौका दिया। उसके बाद संगतकार के रुप में गुरु के साथ बांसुरी वादन का सिलसिला चल निकला। तीन साल बाद वह दिन भी आया जब बांसुरी वादक विवेक ने मंच एकल बांसुरी वादन प्रस्तुत किया।

अपने शिष्यि का भाव विभोर कर देने वाला एकल प्रदर्शन देख गुरु पुरुषोतम अंतापूरकर इस कदर प्रफुल्लित हो उठे कि उन्होंने विवेक से कहा कि मेरे पास जो था, सब तुम्हें सिखा दिया। अब तुम बांसुरी सम्राट पंडित हरि प्रसाद चौरसिया के पास जाओ और उनसे सीखो।

अपने पहले गुरुजी का आदेश सर माथे रख विवेक वर्ष 1997 से पंडित हरिप्रसाद चौरसिया से आज तक बांसुरी वादन सीख रहे हैं। विवेक सोनार की बांसुरी के प्रति दीवानगी को पंडित हरि प्रसाद चौरसिया ने तालीम की भट्टी में आठ साल तक धैर्य और तल्लीमनता से तपाया । पंडित हरि प्रसाद चौरसिया भविष्य के लिए मंचीय प्रस्तुतियों में अपना एक योग्यट संगतकार तराश रहे थे और आठ दस साल वह दिन भी आया जब जलगांव के कीर्तनकार के बेटे विवेक सोनार ने अपने गुरु पंडित हरि प्रसाद चौरसिया के साथ मंच पर

संगत की । यह सिलसिला पिछले 19-20 साल से जारी है, इस बीच विवेक सोनार की एकल प्रस्तुति भी होती रही।

वाराणसी में संकट मोचन संगीत समारोह में एकल प्रस्तुति का विवेक सोनार का सपना वर्ष 2018 में पूरा हुआ, जिसे वर्ष 2021 में पुनः दोहराया गया। संकट मोचन सगीत समारोह के इतिहास में पंडित हरि प्रसाद चौरसिया का नाम बडे आदर के साथ अंकित है। पंडित जी संभवतः अकेले ऐसे कलाकार हैं, जिन्होंने 50 साल तक संकट मोचन के दरबार में अपनी हाजिरी लगाई है। गजब यह कि पंडित हरि प्रसाद चौरसिया विनम्रता से इसका श्रेय संकट मोचन बाबा को देते हुए कहते हैं कि, जब तक सृष्टि रहेगी तब तक संकट मोचन संगीत समारोह हजारों हजार साल तक होता रहेगा और संकट मोचन मुझे जब तक बुलाते रहेगें, मेरी क्या औकात, मैं तो हाजिरी लगाने जाता ही रहूंगा ।

इस बार भी संकट मोचन संगीत समारोह में पंडित हरि प्रसाद चौरसिया का जादुई बांसुरी वादन सुनने की प्रतीक्षा रसिक बडे मन से कर रहे थे, लेकिन उनके पूर्णतया स्वनस्थ होने के बावजूद 87 वर्ष की उम्र में चिकित्सकों ने उन्हों अब लंबी दूरी की यात्रायें न करने की सलाह दी है। संगीत समारोह के संयोजक महंत बिशम्भर नाथ मिश्र के समक्ष यह प्रश्न जरुर रहा होगा कि बांसुरी सम्राट पंडित हरि प्रसाद चौरसिया की भरपाई तो संभव ही नही है, आखिर कौन है जो पंडितजी की प्रतिछाया साबित हो सके। लिहाजा 103वें संकट मोचन संगीत समारोह में तीसरी बार विवेक सोनार को संकट मोचन बाबा के दरबार में हाजिरी लगाने का अवसर प्राप्त हुआ।

विवेक सोनार के लिए यह तीसरी हाजिरी पहले से अधिक चुनौतीपूर्ण थी। पहली दो हाजिरियों में अपने गुरु पंडित हरि प्रसाद चौरसिया के प्रति श्रद्धा के पुष्प अर्पित करने थे किन्तु इस बार मुंबई में बैठे अपने गुरु पंडित चौरसिया को आश्वस्त करना था कि सुनिए गुरूजी विगत 28-29 साल में आपने जिस धैर्य और तल्लीनता, जलगांव जिले के चालीसगांव के विवेक को गढा-मढा है,उसने आपकी प्रतिष्ठा को जरा भी आंच नही आने दी है। और वह इस बात के लिए संकल्पित है कि शेष जीवन भी इसे और समृद्ध करेगा।

संगीत समारोह की तीसरी निशा में बांसुरी वादक विवेक सोनार जब मंच पर अवतरित हुए तो श्रोताओं ने उनका स्वागत पंडित हरि प्रसाद चोरसियाजी जैसा हाथ उठाकर किया। विवेक ने बांसुरी का वही चिरपरिचित माधुर्य बिखरते हुए तान और सुरों की साधना से श्रोताओं को भीतर तक भावों से भर दिया और उनकी बांसुरी का जादू श्रोताओं के सिर चढकर बोला। विराम प्रस्तुति में पंडित हरि प्रसाद चौरसिया की प्रस्तुति की परम्पतरा का निर्वाहन करते हुए विवेक सोनार ने जब बांसुरी पर 'ओम जय जगदीश हरे' की धुन बजाई तो पूरा प्रांगण ' हर हर महादेव' से गूंज उठा।

अपनी प्रस्तुति में विवेक सोनार ने अपने वादन से साबित किया कि परंपरा केवल विरासत नहीं, एक जिम्मेदारी भी होती है। जिसका निर्वहन उन्होनें पूरी जिम्मेदारी के साथ इतने मनोयोग से किया कि श्रोता कह उठे कि गुरु हरि प्रसाद चौरसिया की प्रतिछाया है विवेक सोनार ।

तीन दिनो में बसस्टैंड की व्यवस्थाएं सुधारी जाए : सतीश मालवीय

बस स्टैंड पर सहायक संचालक और सीएमओ ने लगाई झाड़ू

बैतूल। ' स्वच्छता का त्यौहार' अभियान के अंतर्गत शनिवार सुबह लगभग 10 बजे नगर पालिका परिषद बैतूल के अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों की टीम कोठीबाजार स्थित बस स्टैंड पर पहुंची और उनके द्वारा कोठीबाजार बस स्टैंड पर विशेष सफाई अभियान चलाया गया। नगर को स्वच्छ और सुंदर बनाने की दिशा में चलाए जा रहे इस अभियान में भोपाल से आए बैतूल जिले के स्वच्छता प्रभारी सहायक संचालक सतीश मालवीय ने भी मौके पर पहुंचकर अभियान में अपनी सहभागिता दर्ज कराई। इस दौरान बस स्टैंड पर चलाए जा रहे इस विशेष अभियान में नपाध्यक्ष बैतूल पार्वतीबाई बारस्कर, उपाध्यक्ष महेश राठौर, स्वच्छता शाखा सभापति कैलाश धोटे, पार्षद पिंटू परिहार, मंडल अध्यक्ष विकास मिश्रा व विक्रम वैध सहित

अन्य पार्षदगण, नगर पालिका के सीएमओ नवनीत पांडे सहित अधिकारी-कर्मचारी एवं बड़ी संख्या में नागरिकगण भी मौजूद रहे। सभी ने मिलकर बस स्टैंड परिसर पर व्यापक साफ-सफाई की। भोपाल से पहुंचे सहायक संचालक श्री मालवीय द्वारा बस स्टैंड परिसर का निरीक्षण कर आगामी तीन दिनों में पूरे बस स्टैंड क्षेत्र को पूरी तरह स्वच्छ एवं व्यवस्थित बनाने के निर्देश दिए। अधिकारियों ने दीवारों की सफाई करने, जाले हटाने, शौचालयों की स्थिति सुधारने, रेड स्पॉट हटाने, पूरे परिसर में पोछा लगाने और पीछे के क्षेत्र की जेसीबी मशीन से सफाई व समतलीकरण कराने के निर्देश दिए। इसके साथ ही यात्रियों की सुविधा के लिए पंखे चालू करने, ट्वीन बिन लगाने, लाइट लगाने, प्रतीक्षालय से अनावश्यक बैनर-पंपलेट हटाने, पेयजल मशीन को चालू रखने और उसकी नियमित देखरेख सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए गए। शौचालयों में नियमित सफाई और उपयोग का रिकॉर्ड रखने हेतु रजिस्टर मेंटेन करने पर भी जोर दिया गया।

निशुल्क पंचकर्म चिकित्सा शिविर का किया समापन

2416 मरीजों ने लिया लाभ

बैतूल। आयुष विभाग द्वारा टिकारी स्थित जिला आयुर्वेद चिकित्सालय एवं जिला चिकित्सालय के आयुष विंग में 11 मार्च 2026 से 11 अप्रैल तक आयोजित निशुल्क पंचकर्म चिकित्सा शिविर का समापन शनिवार को जिला आयुष कार्यालय टिकारी में किया गया। समापन कार्यक्रम में नगर पालिका उपाध्यक्ष महेश राठौर, विक्रम वैद्य, सांसद प्रतिनिधि कैलाश धोटे, विकास मिश्रा सहित पंचकर्म शिविर की नोडल अधिकारी डॉ. प्रियंका उडक्के एवं सहायक नोडल अधिकारी डॉ. नरेंद्र डडोरे उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान जनप्रतिनिधियों ने पंचकर्म की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए अपने अनुभव साझा किए और आमजन से आयुष पद्धति को अपनाने की अपील की। जिला आयुष अधिकारी डॉ. योगेश चौकीकर ने बताया कि मध्य प्रदेश शासन के निर्देशन में आयोजित इस शिविर में जिला चिकित्सालय में 1636 तथा आयुष विंग में 780 मरीजों सहित कुल 2416 रोगियों ने लाभ प्राप्त किया। उन्होंने बताया कि बसंत ऋतु में कफज रोगों का प्रकोप अधिक रहता है, जिसका उपचार पंचकर्म के माध्यम से शरीर शोधन कर प्रभावी ढंग से किया जाता है। पंचकर्म आयुर्वेद की पांच प्रमुख क्रियाओं पर आधारित उपचार पद्धति है, जिसके माध्यम से रोगानुसार शोधन किया जाता है। कार्यक्रम में डॉ. प्रियंका उईके ने पंचकर्म चिकित्सा के महत्व एवं प्रक्रिया की जानकारी दी। अंत में शिविर से लाभान्वित मरीजों ने अपने अनुभव साझा करते हुए जिलेवासियों से आयुष पद्धति से उपचार लेने की अपील की।

सुधांशु महाराज ने बच्चों को दिया प्रेरणादायक संदेश

मानसरोवर स्कूल परिसर में देखने को मिला भक्ति का माहौल

बैतूल। प्रसिद्ध संत सुधांशु महाराज आज मानसरोवर स्कूल पहुंचे, जहां उनके आगमन पर स्कूल परिसर में भक्ति और उत्साह का माहौल देखने को मिला। स्कूल प्रबंधन की ओर से डॉ. विनय सिंह चौहान, पंकज सांवले और हेमराज अन्नु जसूजा ने पुष्पगुच्छ भेंट कर उनका आत्मीय स्वागत किया। इस अवसर पर सुधांशु महाराज ने विद्यालय के विद्यार्थियों से संवाद किया और उन्हें जीवन में आगे बढ़ने के लिए महत्वपूर्ण मार्गदर्शन दिया। उन्होंने कहा कि सफलता प्राप्त करने के लिए अनुशासन, सकारात्मक सोच और निरंतर मेहनत अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने बच्चों को अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहने और समय का सदुपयोग करने की प्रेरणा दी।

संत ने यह भी कहा कि केवल किताबी ज्ञान ही नहीं, बल्कि नैतिक मूल्यों और संस्कारों का होना भी जीवन में उतना ही महत्वपूर्ण है। उन्होंने विद्यार्थियों को अच्छे संस्कार अपनाने, माता-पिता और गुरुजनों का सम्मान करने तथा समाज के प्रति अपनी

जिम्मेदारियों को समझने का संदेश दिया। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और महाराज के विचारों को ध्यानपूर्वक सुना। सुधांशु महाराज ने बच्चों को आशीर्वाद दिया। अंत में स्कूल प्रबंधन ने उनका आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस प्रकार के प्रेरणादायक कार्यक्रम विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक होते हैं।

नमो इंस्टीट्यूट ऑफ कम्प्युटर एजुकेशन द्वारा टेबलेट एवं किट का किया वितरण

बैतूल। नमो इंस्टीट्यूट ऑफ कंप्यूटर एजुकेशन एवं आशादीप कम्प्युटर एजुकेशन, भोपाल के संयुक्त तत्वाधान में 10 अप्रैल को बड़ी संख्या में विद्यार्थियों को ट्रेनिंग किट एवं टेबलेट का वितरण किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत माँ सरस्वती की पूजा अर्चना से की गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्रीराम शिक्षा परिषद के अध्यक्ष सुशीला देवी अग्रवाल एवं विशिष्ट अतिथि अंबेडकर महाविद्यालय के संचालक इंजी ध्रुव प्रकाश अग्रवाल एवं अंजना देवी अग्रवाल उपस्थित रही। कम्प्यूटर इंस्टीट्यूट के संचालक सर्वेश अग्रवाल ने बताया कि विद्यार्थियों को 6 माह प्रशिक्षण कार्यक्रम के उपरांत आज 100 से अधिक विद्यार्थियों को परीक्षा परिणाम के बाद मार्कशीट, टी शर्ट एवं टेबलेट का वितरण किया जा रहा है। कम्प्युटर प्रशिक्षक कविता गीद, एवं चमन कुमरे द्वारा ट्रेनिंग दी जा रही है। बच्चों को कम्प्युटर ज्ञान से परिचय करवाना एवं इस आधुनिक युग में तकनीकी कौशल में दक्षता बढ़ाना अनिवार्य है। कार्यक्रम में अतिथियों द्वारा ट्रेनिंग किट वितरण किया गया।

सेवा समर्पण, सुशासन एवं अन्त्योदय पखवाड़ा दिवस अन्तर्गत जनता की समस्या के समाधान हेतु अध्यक्ष टोल फ्री नम्बर एवं एकल खिड़की प्रणाली का शुभारंभ

बदनावर नपं अध्यक्ष मीना शेखर यादव के नेतृत्व में सुशासन अन्तर्गत 13 अप्रैल को अध्यक्ष टोल फ्री नम्बर एवं एकल खिड़की प्रणाली का होगा शुभारंभ

धार। बदनावर नगर परिषद अध्यक्ष मीना शेखर यादव के नेतृत्व मे सुशासन अन्तर्गत 13 अप्रैल को अध्यक्ष टोल फ्री नम्बर 07295-232085 एवं एकल खिड़की प्रणाली का शुभारंभ किया जायेगा। जिसके तहत नगर के आम नागरिको को मूलभूत सुविधाओं एवं समस्याओं के समाधान हेतु टोल फ्री नम्बर जारी कर प्रधानमंत्री नरेन्द्र जी मोदी के नेतृत्व मे केन्द्र सरकार द्वारा संचालित एवं मुख्यमंत्री मोहन जी यादव के नेतृत्व मे संचालित मध्यपदेश शासन की समस्त विभिन्न जनकल्याणकारी योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना (बीएलसी), आयुष्यमान कार्ड, पेंशन, भवन एवं संनिर्माण कर्मकार योजना, संबल कार्ड, नामांतरण, निर्माण कार्य, सफाई संबंधित समस्या, जलप्रदाय संबंधित समस्या एवं मूलभूत सुविधा की समस्या के समाधान हेतु टोल फ्री नम्बर जारी किया जायेगा। साथ ही सेवा पखवाड़ा स्वच्छता

अभियान का शुभारंभ, वार्ड क्रं. 15 (रामसेतु डेम) सीता वाटिका पर पौधा रोपण, विभिन्न वार्डो मे जल मंदिर का शुभारंभ, वार्ड क्रं. 1 इन्द्रेश महादेव वाटिका गार्डन का भूमिपूजन, जल गंगा सर्वधन अभियान का शुभारंभ (रामसेतु डेम), स्वच्छता अभियान अन्तर्गत वर्षा ऋतु पूर्व बड़े नालो की सफाई, सम्पूर्ण शहर मे पेयजल नल स्टेण्ड का शुभारंभ एवं विभिन्न वार्डो मे नगर सरकार अन्तर्गत वार्ड वार शिविर का शुभारंभ कर सरकार द्वारा संचालित विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओ की जानकारी प्रदाय कर हितग्राहियों को लाभ दिलाने जाने हेतु प्रेरित करना। नागरिको से अपिल है कि जनकल्याणकारी योजना एवं मूलभूत सुविधा अन्तर्गत अध्यक्ष टोल फ्री नम्बर 07295-232085 पर सूचित कर योजनान्तर्गत लाभ लेवे। अपील है कि शुभारंभ अवसर पर वार्ड के समस्त पार्षद महोदय, एल्डरमेन, जनप्रतिनिधि एवं गणमान्य नागरिक सादर आमंत्रित होकर उपरोक्त कार्यक्रम को सफल बनाये।

फोर्सिथ रिसोर्ट सतपुड़ा टाइगर रिजर्व मढई के मेनेजर एवं नेचुरलिस्ट को मिली उच्च न्यायालय से जमानत

सोहागपुर

विश्व विख्यात सतपुड़ा टाइगर रिजर्व मढई में 4 4एकड़ क्षेत्र में नेचुरल तरीके के विख्यात फोर्सिथ रिसोर्ट मढई के मेनेजर निपुण महतो एवं वर्ल्ड लाइफ़ नेचुरलिस्ट फैजान अंसारी को उच्च न्यायालय के विद्वान न्यायाधीश न्यायमूर्ति रामकुमार चौबे की अदालत ने जमानत अर्जी याचिका स्वीकार कर ली गई है। इस मामले में प्रदेश के विख्यात वरिष्ठ अधिवक्ता श्री सुरेन्द्र सिंह एवं अधिवक्ता श्री सिद्धार्थ शर्मा ने 10 अप्रैल, 2026 को विविध आपराधिक मामला संख्या 13635 वर्ष 2026 में उपस्थित होकर संपूर्ण प्रकरण में तथ्यात्मक विश्लेषण करके माननीय न्यायालय का ध्यानाकर्षण किया। जिसमें विद्वान न्यायाधीश ने दोनों की जमानत अर्जी याचिका स्वीकार कर ली गई। इस चर्चित प्रकरण में विद्वान न्यायमूर्ति ने तथ्यात्मक आदेश पारित किया है। इस संबंध में सोहागपुर में प्रतिष्ठित अधिवक्ता परिवार के वकील प्रतीक तिवारी ने इस प्रतिनिधि को उच्च न्यायालय जबलपुर की सम्पूर्ण जानकारी दी। आपने बताया कि भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 की धारा 483 के तहत आवेदकों द्वारा नियमित जमानत के लिए दायर किया गया पहला आवेदन है। यह आवेदन वन अपराध संख्या 104/09 से संबंधित है, जो वन रेंज बागरा जोन, सोहागपुर में वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम की धारा 2(2), 39(ब), 40(2), 42 और 51 के तहत दंडनीय अपराध के लिए दर्ज किया गया है। आवेदक 15.03.2026 से जेल में हैं। वहीं अभियोजन पक्ष का मामला यह है कि 07.03.2026 को वनकर्मी सारंगपुर स्थित फोर्सिथ रिज़ॉर्ट पहुंचे, जो सतपुड़ा बाघ अभ्यारण्य के वन क्षेत्र में स्थित है। वहां एक कमरे में वन्यजीवों से संबंधित कुछ वस्तुएं, जैसे चार हिरण के सींग, दो सांप की खाल और चार साही के कांटे, प्रदर्शित किए गए थे। परिणामस्वरूप, चूंकि ये वस्तुएं वन्यजीवों से संबंधित हैं, इसलिए अपराध दर्ज किया गया है। वहीं इसी संदर्भ में आरोपियों के विद्वान वरिष्ठ अधिवक्ता सुरेन्द्रसिंह ने प्रस्तुत किया कि आवेदक,,,,,,आवेदक निर्दोष हैं और उन्हें बिना किसी आधार के इस मामले में झूठा फंसाया गया है। आवेदक के विद्वान वरिष्ठ वकील ने वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 की धारा 2(2) का हवाला देते हुए कहा कि बरामद वस्तुएं अधिनियम में परिभाषित %पशु वस्तुओं% की श्रेणी में नहीं आती हैं और इसलिए, अधिनियम की धारा 39 के तहत यह सरकारी संपत्ति नहीं बनती है। ऐसी स्थिति में, आवेदकों के खिलाफ कोई अपराध नहीं बनता है। आगे यह भी कहा गया है कि आवेदकों पर ऐसे अपराधों का आरोप लगाया गया है जिनके लिए अधिकतम सात वर्ष की सजा हो सकती है और इसलिए उन्हें मुकदमे की समाप्ति तक जेल में नहीं रखा जाना चाहिए। क्योंकि उन्होंने जांच के दौरान पहले ही सहयोग किया है। आवेदक 15.03.2026 से जेल में हैं। अपने तर्कों को मजबूत करने के लिए विद्वान वरिष्ठ अधिवक्ता सुरेन्द्रसिंह जबलपुर ने

मोहम्मद के मामले में सर्वोच्च न्यायालय के एक फैसले पर भरोसा जताया है। असफाक आलम बनाम झारखंड राज्य, 2023(8) एससीसी 632 का हवाला देते हुए और अनेंश कुमार बनाम बिहार राज्य (2014) 8 एससीसी 273 के मामले में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा जारी दिशा-निर्देशों की ओर भी ध्यान आकर्षित किया गया है। इन आधारों पर, यह प्रार्थना की जाती है कि आवेदकों को जमानत पर रिहा किया जाए। इसके विपरीत, प्रतिवादी/राज्य के वकील ने जमानत याचिका का विरोध किया था कि आरोपी जमानत के पात्र नहीं हैं। माननीय उच्च न्यायालय जबलपुर में सवाल उठा कि बरामद वस्तुएं इसके अंतर्गत आती हैं या नहीं,,,,, धारा 2(2) के अंतर्गत पशु वस्तु या धारा 2(31) के अंतर्गत ट्रॉफी की परिभाषा की इस स्तर पर योग्यता के दृष्टिकोण से जांच करना आवश्यक नहीं है। हालांकि, ट्रॉफी शब्द को निम्नानुसार परिभाषित किया गया है।आवेदकों पर लगाए गए आरोप अधिकतम सात वर्ष की सजा के योग्य हैं। आवेदक 15.03.2026 से जेल में हैं और इस संबंध में काफी जांच हो चुकी है। आवेदकों ने न तो वन क्षेत्र से जानवरों का शिकार किया है और न ही उनसे संबंधित वस्तुएं एकत्र की हैं, बल्कि उन्हें केवल कमरे में प्रदर्शित किया है। आवेदकों के फरार होने या सबूतों से छेड़छाड़ करने की कोई आशंका नहीं है और मुकदमे की सुनवाई पूरी होने तक उन्हें जेल में रखना उचित नहीं होगा। इन परिस्थितियों में माननीय उच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति रामकुमार चौबे ने निर्णय दिया कि आवेदकों को जमानत पर रिहा करना उचित है। अतः, मामले की खूबियों पर कोई टिप्पणी किए बिना, यह आवेदन स्वीकार किया जाता है। जिसमें निर्देश दिया जाता है कि आवेदक फैजान अरसाद जिया अंसारी और निपुण कुमार महतो को 50,000/- रुपये (पचास हजार रुपये) के व्यक्तिगत मुचलके और इतनी ही राशि के एक-एक ज़मानतदार प्रस्तुत करने पर जमानत पर रिहा किया जाए। जो संबंधित निचली अदालत की संतुष्टि के अनुरूप हो।ताकि वे मुकदमे की सुनवाई के दौरान इस संबंध में निर्धारित सभी तिथियों पर उक्त न्यायालय के समक्ष उपस्थित हों।,,,9. आगे यह निर्देश दिया जाता है कि आवेदक बीएनएसएस की धारा 480 (3) के प्रावधानों का अनुपालन करें।

अन्दर खाने की बातें

चर्चा में पता चला है कि उक्त विवाद एक प्रशासनिक अधिकारी को इस महंगे रिसोर्ट में दो रूम की तत्काल आवश्यकता थी। जब रूम उपलब्ध नहीं सके। इससे ख़फ़ा होने पर कार्यवाही जनता-जनार्दन के सामने आ गई। बड़े मजे की बात तो यह है कि इस प्रकरण को दर्ज होने के उपरांत आरोपियों को काफी दिनों के बाद गिरफ्तार किया गया। वहीं न कहीं दाल में काला अवश्य है?। इस मामले में यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि स्थानीय से लेकर जिला मुख्यालय का सतपुड़ा टाइगर रिजर्व भी संदेश के घेरे में खड़ा नजर आ रहा है? क्या पूर्व में सतपुड़ा टाइगर रिजर्व के भारी-भरकम अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए डिस्प्ले में लगाएं गए, वन्य प्राणियों के अव्यय की भनक तक नहीं लगी। इस मामले में वन संरक्षक एसटीआर को संज्ञान लेना चाहिए।कि इतना बड़ा अमल क्या केवल वीवीआईपी की सेवा के लिए आवंटित है। या वन्य प्राणियों की रक्षा के लिए। वहीं आनन-फानन में फोर्सिथ रिसोर्ट के किचन की भी जांच कर ली गई। हालांकि यहां ऐसे कई बड़े रिसोर्ट मढई में हैं। लेकिन वे अछूते रहे आखिर क्यों यह बड़ा सवाल जनता जनार्दन समझ नहीं पा रही है।

उल्लेखनीय

ज्ञातव्य है कि सतपुड़ा टाइगर रिजर्व मढई के 44 एकड़ में फैले विख्यात फोर्सिथ रिसोर्ट सारंगपुर मढ़ई का संचालन मुम्बई से अदिति मोदी लूनिया के द्वारा किया जाता है। इस रिसोर्ट में 40 एकड़ नेचुरल इलाका है।शेष में रिसोर्ट निर्मित किया गया है।इसी कारण इस रिसोर्ट में एक दिन का किराया सीज़न के समय लगभग 40 हज़ार रुपए तक रहता है।

श्रद्धांजलि : बृजभूषण मेहरु

अलविदा वाग्मिता के वृहद कोश

कभी-कभी कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं, जो सामने कम दिखाई देते हैं लेकिन अपने काम और प्रभाव से पूरी पीढ़ियों को आकार दे जाते हैं। बृजभूषण मेहरु ऐसे ही विलक्षण व्यक्तित्व थे। वे केवल एक उद्घोषक नहीं थे, बल्कि शब्दों के साधक, आवाज़ के कलाकार और भाषा के सच्चे संरक्षक थे। उनकी विदाई केवल एक व्यक्ति का जाना नहीं, बल्कि एक युग का समाप्त होना है।

रविराज प्रणामी

बृजभूषण मेहरु का नाम भले ही आम लोगों के बीच उतना चर्चित न रहा हो, लेकिन रेडियो, सिनेमा और संगीत की दुनिया में उनका योगदान अत्यंत गहरा और स्थायी है। उनकी पहचान एक ऐसे वाक्पटु कलाकार की थी, जिनकी आवाज़ में गंभीरता, स्पष्टता और गरिमा का अद्भुत संगम था। वे शब्दों को केवल बोलते नहीं थे, बल्कि उन्हें जीते थे और श्रोताओं तक उनकी आत्मा पहुंचा देते थे। उनकी विद्वता और भाषा पर पकड़ का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि महान गायक मोहम्मद रफी जैसे दिग्गज भी उनके पास शब्दों के सही उच्चारण को समझने के लिए आया करते थे। यह एक असाधारण बात है कि जिसे दुनिया 'खुदा की आवाज़' कहती थी, वह स्वयं किसी के पास जाकर शब्दों की बारीकियां सीखता था। रफी साहब की यही विनम्रता और बृजभूषण जी की यही विद्वता उन्हें विशेष बनाती है।

कहा जाता है कि जब भी रफी साहब को किसी गीत में कठिन उर्दू या हिंदी शब्दों का उच्चारण समझना होता, तो वे बिना किसी औपचारिकता के बृजभूषण जी के पास पहुंच जाते थे। वे फर्श पर बैठकर बड़े ध्यान से हर शब्द का सही उच्चारण और उसके भाव को समझते थे। बृजभूषण जी केवल शब्द नहीं सिखाते थे, बल्कि यह भी बताते थे कि उस शब्द को आवाज़ में कैसे उतारा जाए, ताकि उसका भाव पूरी तरह प्रकट हो सके। वाग्मिता, यानी प्रभावशाली और सुंदर ढंग से बोलने की कला, बृजभूषण मेहरु के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी पहचान थी। उनकी इसी कला का सम्मान करते हुए उन्हें 'वाग्मिता का वृहद कोश' कहा जाता था। उनकी आवाज़ में एक ऐसा ठहराव था, जो श्रोताओं को बांध लेता था और उनके शब्दों में ऐसी स्पष्टता थी, जो सीधे दिल तक पहुंचती थी।

उनकी प्रतिभा का एक और बड़ा प्रमाण यह है कि प्रसिद्ध उद्घोषक अमीन सायानी, जिन्हें रेडियो का बादशाह कहा जाता है, वे भी बृजभूषण जी को अपना प्रिय उद्घोषक मानते थे। अमीन सायानी ने कई बार यह स्वीकार किया कि उन्होंने बृजभूषण जी से बहुत कुछ सीखा है। वे उनकी आवाज की गहराई, उच्चारण की शुद्धता और बोलने के अंदाज की खुले दिल से प्रशंसा करते थे। यह अपने आप में बहुत बड़ी बात है कि एक महान कलाकार दूसरे महान कलाकार को अपना आदर्श माने।

रेडियो के स्वर्ण युग में बृजभूषण मेहरु का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। उस दौर में जब रेडियो मनोरंजन और सूचना का प्रमुख माध्यम था, उनकी आवाज़ लाखों लोगों तक पहुंचती थी। उनकी आवाज़ में एक अलग ही आकर्षण था, जो श्रोताओं को अपने साथ जोड़ लेता था। सिर्फ रेडियो ही नहीं, बल्कि सिनेमा और विज्ञापन जगत में भी उनकी आवाज़ का जादू खूब चला। 70 से 90 के दशक में जब सिनेमा हॉल में फिल्म शुरू होने से पहले डॉक्यूमेंट्री या विज्ञापन चलते थे, तो उनकी गूंजती हुई मखमली आवाज़ पूरे हॉल को भर देती थी। उनकी आवाज़ में एक ऐसी गहराई थी, जो बिना ऊंचा बोले भी हर व्यक्ति तक पहुंच जाती थी। इसे तकनीकी भाषा में 'थ्रोट रेजोनेंस' कहा जाता है, जिसमें आवाज की गूंज बहुत प्रभावशाली होती है।

विज्ञापन जगत में भी उनका योगदान उल्लेखनीय रहा। तंदुरुस्ती की रक्षा करता है लाइफबॉय, ओनली विमल और 'लीरिल' जैसे लोकप्रिय जिंगल्स उनकी ही देन थे। इन जिंगल्स ने न केवल उत्पादों को लोकप्रिय बनाया, बल्कि एक नई शैली भी स्थापित की, जिसे आज भी आदर्श माना जाता है। बृजभूषण मेहरु केवल उद्घोषक या वॉइस आर्टिस्ट ही नहीं थे, बल्कि संगीत और भाषा के भी गहरे जानकार थे। उन्होंने कई फिल्मों में संगीत भी दिया, जिनमें 'मिलाप' (1972) प्रमुख है। इस फिल्म में मोहम्मद रफी, मुकेश और आशा भोसले जैसे महान गायकों ने गीत गाए। उनके द्वारा संगीतबद्ध गीत आज भी सुनने में मधुर और भावपूर्ण लगते हैं।

उनका व्यक्तित्व केवल यहीं तक सीमित नहीं था। वे एक उत्कृष्ट अनुवाद सर्जक भी थे। वे मानते थे कि अनुवाद केवल शब्दों का परिवर्तन नहीं, बल्कि भावों का पुनर्सृजन होता है। इसलिए वे हमेशा इस बात पर जोर देते थे कि अनुवाद ऐसा हो, जो सीधे दर्शकों या श्रोताओं के दिल को छू जाए। उन्होंने लंबे समय तक विभिन्न अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रमों और चैनलों के लिए अनुवाद का कार्य किया और अपनी विशिष्ट शैली से उसे नया आयाम दिया। उनका घर भी कला और संस्कृति का केंद्र हुआ करता था। वहां अक्सर कलाकारों, संगीतकारों और साहित्यकारों की बैठकें होती थीं, जहां संगीत और शब्दों पर गहरी चर्चा होती थी। वे हमेशा इस बात पर ध्यान देते थे कि किसी भी रचना में शब्दों के साथ न्याय हो।

इतने बड़े और बहुआयामी व्यक्तित्व के बावजूद बृजभूषण मेहरु ने कभी प्रसिद्धि की चाह नहीं रखी। वे हमेशा पर्दे के पीछे रहकर काम करना पसंद करते थे। यही कारण है कि आम जनता उनके नाम से भले ही कम परिचित हो, लेकिन उनके काम से अनजान नहीं है। उनका जीवन हमें यह सिखाता है कि सच्ची महानता दिखावे में नहीं, बल्कि अपने कार्य के प्रति समर्पण में होती है। उन्होंने अपनी कला, अपने ज्ञान और अपनी आवाज़ के माध्यम से एक ऐसी विरासत बनाई, जो आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी।

अप्रैल 1935 में जन्मे बृजभूषण मेहरु ने अप्रैल में ही इस दुनिया को अलविदा कहा। यह संयोग ही है कि जिस महीने में उन्होंने जीवन की शुरुआत की, उसी महीने में उन्होंने अपनी अंतिम यात्रा भी पूरी की। उनके जाने से एक ऐसा खालीपन पैदा हुआ है, जिसे भर पाना आसान नहीं होगा। अंततः यही कहा जा सकता है कि बृजभूषण मेहरु केवल एक व्यक्ति नहीं थे, बल्कि एक संस्था थे। उनकी आवाज़, उनकी वाग्मिता और उनका ज्ञान हमेशा हमारे बीच जीवित रहेंगे। वे भले ही इस दुनिया से विदा हो गए हों, लेकिन उनकी गूंज हमेशा हमारे दिलों और यादों में बनी रहेगी। एक महान आत्मा को विनम्र श्रद्धांजलि।

रियल बॉक्स

फिल्मों के डराने वाले मनहूस टाइटल

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

सलमान खान ने हाल ही में अपनी फिल्म 'गलवान' का नाम बदलकर 'मातृभूमि' रख दिया। इसके पीछे कारण चाहे जो भी बताए जा रहे हों, लेकिन इस बात से भी इंकार नहीं किया जा रहा कि पुराने नाम को बदलने के पीछे कोई शुभ-अशुभ का गणित भी हो सकता है। क्योंकि, ऐसे प्रयोगों का एक लंबा इतिहास रहा है। कुछ फिल्में सिर्फ नाम की वजह से ही नहीं चली। कई बार तो फिल्मों के नाम की स्पेलिंग बदलकर इस प्रयोग को सुधारा गया, जो सफल रहा। बॉलीवुड की चमक-दमक भरी दुनिया में जहां करोड़ों की कमाई का सपना हर कलाकार देखता है, वहीं अंधविश्वास की जड़ें इतनी गहरी होती है कि टाइटल की एक स्पेलिंग बदलने से फिल्म की किस्मत पलट सकती है। सफलता का मंत्र सिर्फ टैलेंट, स्क्रिप्ट या स्टार पावर नहीं, बल्कि सही टाइमिंग और भाग्य भी है। इंडस्ट्री के पुराने दिग्गजों से लेकर नए सितारों तक, हर कोई टोटकों का सहारा लेता है मंगल दोष दूर करने के लिए पूजा, शुभ मुहूर्त में शूटिंग शुरू करना या फिर नाम बदलकर रिलीज। लेकिन, कुछ टाइटल ऐसे हैं जो जड़ से मनहूस साबित हुए हैं। इनका जिक्र होते ही प्रोड्यूसर्स के चेहरे पीले पड़ जाते हैं। सबसे कुख्यात है 'शहजादा'। पिछले 50 सालों में राजेश खन्ना, अजय देवगन और कार्तिक आर्यन जैसे सितारों ने इस नाम के साथ दांव लगाया, लेकिन हर बार बॉक्स ऑफिस पर पानी फेर गया।

बॉलीवुड में 'शहजादा' नाम की काली छाया इतनी घनी है कि इसका जिक्र भर से स्टार्स सिहर उठते हैं। पहली बार यह अभिशाप 1972 में राजेश खन्ना पर उतरा। सुपरस्टार खान साहब की लहर पर सवार होकर 'शहजादा' रिलीज हुई। डायरेक्टर कोटि कोमीनिनी की यह फिल्म मूल रूप से इटैलियन हिट 'पुडूडा गोगो' का रीमेक थी। राजेश खन्ना के अलावा मोना सिंह और प्रिया राजवंश मुख्य भूमिकाओं में थे। उम्मीदें आसमान छू रही थीं, लेकिन फिल्म ने महज 50 लाख की कमाई की। ट्रेड एनालिस्टों के मुताबिक, बजट के मुकाबले 70 प्रतिशत का घाटा हुआ। दर्शक फिल्म को पुरानी और बेस्वाद मान बैठे। राजेश खन्ना का जलवा उस दौर में था, फिर भी 'शहजादा' ने उनकी लकीर तोड़ दी। इंडस्ट्री में चर्चा फैली कि नाम में ही कुछ खराब है। चार दशक बाद 2012 में अजय देवगन ने इस मनहूस टाइटल को फिर आजमाया। 'सन ऑफ सरदार' के बाद मनोज मुंतशिर की स्क्रिप्ट पर बनी यह फिल्म एक्शन-ड्रामा थी। संजय लीला भंसाली प्रोडक्शन की चमक के साथ अजय देवगन, संजय दत्त और काजोल जैसे सितारे थे। लेकिन रिलीज होते ही धमाका उल्टा फूटा। पहले हफ्ते में 25 करोड़ जुटाए, लेकिन कुल 45 करोड़ पर सिमट गई। बजट 80 करोड़ से ऊपर था, यानी प्रोड्यूसर्स को 50 करोड़ का चूना लगा। क्रिटिक्स ने स्क्रिप्ट को कमजोर बताया, लेकिन ट्रेड गुरु कमल जैन जैसे जानकारों का मानना है कि 'शहजादा' नाम ने ही आग में घी डाला। अजय देवगन ने बाद में स्वीकार किया कि फिल्म की असफलता ने उन्हें सोचने पर मजबूर कर दिया।

सबसे ताजा झटका 2023 में कार्तिक आर्यन को लगा। रोहित धवन डायरेक्टोरियल 'शहजादा' तेलुगु हिट 'अला वाइकुंठपुरमलू' का रीमेक थी। कार्तिक आर्यन, कृति सैनन और तड्डुह्व के साथ पूजा हेगड़े थीं। प्रचार भव्य था, ट्रेलर वायरल हुआ, लेकिन बॉक्स ऑफिस पर जीरो। पहले दिन 6 करोड़, कुल 30 करोड़ की कमाई। 75 करोड़ बजट वाली फिल्म ने 60 प्रतिशत घाटा दिया। कार्तिक की 'फ्रेडी' जैसी पिछली हिट्स के बावजूद दर्शक मुंह फेर लिया। सोशल मीडिया पर मीम्स की बाढ़ आ गई। निर्देशक रोहित धवन ने कहा, 'कभी-कभी चीजें नियंत्रण से बाहर हो जाती हैं।' लेकिन इंडस्ट्री वाले फुसफुसाते हैं शहजादा का अभिशाप फिर चला। तीन दशकों में तीन फ्लॉप, तीन स्टार्स की बर्बादी। क्या यह संयोग है या नाम का जादू?

'शहजादा' अकेला नहीं। बॉलीवुड में कई ऐसे टाइटल हैं जो फ्लॉप की गारंटी बन चुके हैं। 'आग' इसका सबसे काला उदाहरण है। 1980 के दशक में कमल हासन की 'आग' आई, जो सुपरफ्लॉप रही। फिर 1999 में गोविंदा और कैरी अमीन वाली 'आग' ने 5 करोड़ का बजट खा लिया। 2003 में संजय दत्त की 'लूंगी' टाइप 'आग' आई, फिर फुस्स। तीनों 'आग' बॉक्स ऑफिस पर जल गईं। प्रोड्यूसर आज भी इससे दूर भागते हैं एक और नाम है 'बदला।' 1966 में मीना कुमारी की 'बदला' फ्लॉप हुई। 1970 में धर्मेंद्र वाली भी डूबी। 2019 में तापसी पन्नू और अमिताभ बच्चन की 'बदला' ने तो कमाल किया, लेकिन इससे पहले के दो 'बदला' ने इंडस्ट्री को सबक सिखाया। ट्रेड एक्सपर्ट सुमीत कचड़ कहते हैं कि बार-बार फेल होने वाले नामों से बचना चाहिए। 'खिलाड़ी' भी मनहूस साबित हुआ। अक्षय कुमार की 1996 वाली 'खिलाड़ी' हिट रही, लेकिन 2016 में 'खिलाड़ी 786' ने 125 करोड़ बजट पर 50 करोड़ कमाए। फिर 2022 में सिद्धू की 'खिलाड़ी' सीरीज का नया भाग फुस्स। नाम की चमक फीकी पड़ गई। इसी तरह 'हमसे ही सीखो' या 'मिस्टर इंडिया के बाद' जैसे टाइटल भी दुर्भाग्य लाए। लेकिन सबसे ज्यादा चर्चित 'नो एंट्री' का सीक्वल। 2005 की अनीस बज्मी वाली हिट थी, लेकिन 2024 तक लटकी 'नो एंट्री 2' रद्द हो गई। प्रोड्यूसर बोले, नाम में ही दिक्कत है। इसके अलावा 'काला' भी काला पड़ा। 2012 में विवेक ओबेरॉय वाली फ्लॉप, 2023 में सलमान खान की साउथ रीमेक भी औसत रही। आशय यह कि नाम ही बॉक्स ऑफिस का दुश्मन। पुराने जमाने में 'धुंध' या 'बारिश' जैसे टाइटल भी फ्लॉप रिकॉर्ड बनाए। आजकल डिजिटल एनालिटिक्स से पहले ट्रेड वाले नाम चेक करते हैं।

1980 में सुभाष घई की 'कर्ज' में ऋषि कपूर लीड रोल में थे, लेकिन यह बुरी तरह फ्लॉप हो गई। बजट के मुकाबले महज आधी कमाई हुई। 2002 में सनी देओल और शिल्पा शेट्टी वाली 'कर्जः द बर्डन ऑफ ट्रूथ' ने 15 करोड़ ही जुटाए, जबकि उम्मीदें भारी थीं। 2008 में हिमेश रेशमिया का 'कर्ज' रीमेक आया, फिर फुस्स। इसके अलावा कर्ज तेरे खून का (1990), दूध का कर्ज (2016),'प्यार का कर्ज, कर्ज चुकाना है जैसी फिल्में भी बॉक्स ऑफिस पर डूब गईं। इंडस्ट्री वाले इसे शापित मानते हैं। एक एक्ट्रेस का तो करियर ही खत्म हो गया, किसी ने डिप्रेशन झेला, प्रोड्यूसर भी दिवालिया हुए। 'आग' ने भी कमाल किया। 1980 के दशक में कमल हासन वाली फ्लॉप, 1999 में गोविंदा की असफल, 2003 में संजय दत्त वाली भी जलकर राख। तीनों ने प्रोड्यूसर को बर्बाद किया। 'बदला' का सिलसिला तो 1966 से चला। मीना कुमारी वाली फेल, 1970 में धर्मेंद्र की फिल्म डूबी, हालांकि 2019 वाली हिट रही, लेकिन पुरानी ने नाम खराब कर दिया। 2025 में सलमान खान की 'सिकंदर' सबसे बड़ी फ्लॉप बनी,

जिसकी लागत तक नहीं निकली। शूटिंग में स्क्रिप्ट बदली, लेकिन नाम भी मनहूस साबित हुआ। ये उदाहरण बताते हैं कि 'शहजादा' अकेला नाम नहीं है। 'कर्ज' जैसे नाम भी पूरी इंडस्ट्री का दुश्मन बने। ये टाइटल साबित करते हैं कि बॉलीवुड में नाम बदलना क्यों जरूरी माना जाता है।

बॉलीवुड में नाम बदलना आम है। जब मनहूस टाइटल का डर सताता है, तो स्पेलिंग जादू चल जाता है। सबसे मशहूर केस है 'शोले'। मूल नाम कुछ और था, जिस पर मनोज कुमार ने आपत्ति जताई थी। फिर 'द बॉम्बे समर 1971' सोचा गया, लेकिन अंत में 'शोले' किया गया। 1975 में 35 करोड़ कमाई, सुपरहिट। अगर पुराना नाम रहता, तो शायद यह नहीं होता! सलमान खान की 'राधे' भी मूल रूप से 'राधिका' थी। अंधविश्वास से 'राधे : योर मोस्ट वांटेड भाई' हो गया। पाइरेटेड रिलीज के बावजूद फील हिट रही। आमिर खान की 'लगान' का नाम पहले 'सरकारी राज' था। ज्योतिषी बोले, यह नाम नेगेटिव है। फिर जो नाम बदला उसके बाद तो ऑस्कर नॉमिनेशन मिला। '3 इडियट्स' का नाम भी पहले '5 इडियट्स' था, जिसे बदला गया तो फिल्म ने इतिहास बना दिया। राजकुमार हिरानी ने कहा था 'नाम में ही ताकत है।' शाहरुख खान की 'ओम शांति ओम' पहले 'ओम शांति शांति' था। शांति दो बार से डर लगा, तो नाम बदला गया फिल्म 2007 में ब्लॉकबस्टर हुई।अब तो प्रोड्यूसर नाम की पहले ही टेस्टिंग कराने लगे। बॉलीवुड की यह दास्तान साबित करती है कभी नाम से मत डरो, जरा भी शंका हो, तो बदल दो!

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

फिर विवाद में आए है सिनेमा के राम

अशोक जोशी

जब से नितिश तिवारी की चार हजार करोड़ की लागत वाली फिल्म 'रामायण' का टीज़र आया, विवादों का एक अंतहीन सिलसिला आरंभ हो गया। किसी को फिल्म के नायक रणबीर कपूर को लेकर परेशानी

है, तो कोई महज इसलिए परेशान हो रहा है कि फिल्म में वीएफएक्स और एआई का प्रयोग किया गया है। कुछ लोग को इसकी तुलना 1987 में दूरदर्शन पर प्रसारित रामानंद सागर के लोकप्रिय धारावाहिक 'रामायण' से तुलना करने लगे हैं। ऐसे में ज्यादातर लोगों ने फिल्म के बदलते मिजाज और प्रयुक्त होने वाली आधुनिक तकनीकों को नजर अंदाज ही किया है।

हिंदी 'रामायण' में राम की भूमिका में रणबीर कपूर के लुक को देखकर सबसे पहले रामानंद सागर के धारावाहिक 'रामायण' के लक्ष्मण सुनील लहरी ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा है कि फिल्म 'एनिमल' की क्रूर भूमिका के बाद रणबीर को स्नेहिल और सदा मुस्कराते हुए राम की भूमिका करते देखकर अजीब सा लगता है। उनका यह भी मानना है, कि यदि उनके इस आक्रामक रूप को देखा जाए तो वह लक्ष्मण की भूमिका में ज्यादा फबते। सुनील लहरी का यह भी मानना है, कि राम की भूमिका को तो अरुण गोविल अमर कर गए। इसलिए इस रोल में उनके सिवा कोई और नहीं जंचता। कुछ लोगों को रणबीर कपूर को राम की भूमिका करने से इसलिए भी एतराज है कि बरसों पहले उन्होने यह बयान दिया था कि वह बीफ खाने के शौकीन हैं।

आज जिस रणवीर कपूर को राम बनाने पर लोगों को एतराज है, कभी खुद रणवीर को इस भूमिका को करने पर एतराज था। शुरुआत में उन्होंने इस रोल को करने से मना कर दिया था। क्योंकि, वह इतनी बड़ी जिम्मेदारी से डर गए थे और खुद को इस भूमिका के लिए योग्य नहीं मानते थे। मेगा बजट फिल्म 'रामायण' इस साल दीवाली के मौके पर रिलीज होने वाली है। दो पार्ट में बन रही ये फिल्म 'रामायण' की कहानी को ग्रैंड स्केल पर बड़े पर्दे पर आने वाली है। फिल्म में कमाल की स्टार कास्ट है, जिसमें हिंदी सिनेमा और साउथ सिनेमा के बड़े नाम शामिल हैं। फिल्म का पहला टीजर रिलीज होने के बाद से इस फिल्म के बारे में और जानकारी सामने आ रही है। हाल ही में रणवीर कपूर ने बताया कि जब उन्हें भगवान राम का किरदार ऑफर हुआ था, तो उन्होंने शुरुआत में इसे निभाने से साफ इनकार कर दिया था।

उन्होने यह भी बताया कि जब उनसे भगवान राम का किरदार निभाने को लेकर पूछा गया, तो वो जिम्मेदारी से डर गए थे और उन्हें लगा कि वो इस भूमिका के लिए योग्य नहीं हैं। लेकिन, इस घटना के कुछ वक्त के बाद नमित मल्होत्रा ने फिल्म को लेकर उन्हें अपना विजन बताया और जब उनकी मुलाकात फिल्म के डायरेक्टर नितेश तिवारी से हुई। उस वक्त नितेश ने उन्हें फिल्म की कहानी बताई, जिसके बाद उन्होंने रोल के लिए हामी भर दी। बावजूद इसके उन्हें कई दिनों तक तो यह यकीन ही नहीं हुआ कि वह भगवान राम का किरदार निभा रहें है। लेकिन, आज वह इसे अपने जीवन और करियर का सबसे बड़ा टर्निंग पॉइंट मानते हैं।

रणवीर द्वारा राम की भूमिका स्वीकार करने का एक और कारण भी है। उनका मानना है, कि फिल्म के ऑफर और पहली बार पिता बनने की खबर के बीच कुछ ऐसा हुआ कि उनकी जिंदगी ही बदल गई। उनका मानना है कि उस दौरान वे जिंदगी के ऐसे दौर से गुजर रहे थे, जहां उन्हें अपनी जिंदगी और जीवन शैली में बदलाव लाने की जरूरत थी। वह पहली बार पिता बने थे। तब उन्हें लगा कि भगवान राम का रोल निभाने और पिता बनने का यह प्यारा संयोग उनकी जिंदगी में एक अहम मोड़ लाने के लिए

जरूरी था। पिता बनने के साथ साथ राम की भूमिका निभाने के बाद वास्तव में उनकी जिंदगी में काफी बदलाव आया है। उन्होंने खुद को उस किरदार में पूरी तरह ढाल लिया। यहां तक कि फिल्म निर्माण के दौरान उन्होंने मांसाहार और मदिरापान तक छोड दिया। इसके पीछे वह अपने दादा राज कपूर की प्रेरणा मानते हैं, क्योंकि राजकपूर भी फिल्म निर्माण के दौरान पूरी तरह से शाकाहारी बन जाते थे।

ऐसा नहीं कि राम की भूमिका के लिए रणवीर की चौतरफा आलोचना ही हो रही है। विवादों के बीच सदगुरू ने रामायण के कलाकारों के बारे में अपनी सकारात्मक राय बताकर विवाद की आग को शांत करने का प्रयास किया है। ऐसे में जब लोग अतीत की बातें निकालकर पूछ रहे हैं कि रणवीर कपूर 'रामायण' में श्री राम का किरदार कैसे निभा सकता है। सदुरु न कहते हैं कि यह एक अभिनेता के बारे में गलत है। क्योंकि, उसने अतीत में किसी न किसी रूप में अभिनय किया है। आप उससे राम बनने की उम्मीद नहीं कर सकते? कल किसी और फिल्म में वह रावण का किरदार निभा सकता है। उन्होंने रावण के रूप में यश की कास्टिंग के बारे में कहा कि यश एक सुंदर इंसान होने के साथ साथ एक बहुत ही प्रतिभाशाली सुपरस्टार हैं।

जहां तक फिल्म की तकनीक का प्रश्न है फिल्म के शुरुआती सीन में भगवान राम' को काफी दिव्य रूप में दिखाने के लिए वीएफएक्स का इस्तेमाल किया गया है। टेक्निकली, फिल्म में मोशन कैप्चर टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल किया गया है, जिसका मकसद किरदारों के एक्सप्रेशन को जिंदा करना है। जिसके बारे में कुछ लोग इसे बनावटी मान रहे है। इस पर निर्माता का कहना है कि हम सब देख रहे हैं और आवश्यक हुआ तो प्रदर्शन से पहले वीएफएक्स के दृश्यों में जरूरी सुधार कर इसे वास्तविक बनाने का प्रयास किया जाएगा।

'अवतार' जैसी फिल्मों में वीएफएक्स और एआई तकनीक का अच्छा उपयोग किया गया है जिसे दर्शकों ने स्वीकार भी किया है। उम्मीद है कि चार हजार करोड़ रुपए खर्च करने वाले निर्माता इस बात को स्वीकार कर अपनी फिल्म को भव्य बनाने के लिए हर प्रयास जरूर करेंगे। जिसका निर्णय फिल्म के प्रदर्शन के बाद ही हो पाएगा। यह तो तय है कि 'आदि पुरुष' में वीएफएक्स के फूहड़ उपयोग और उसकी असफलता से 'दंगल' जैसी सफल फिल्म के निर्देशक नितेश तिवारी निश्चय ही कुछ सबक लेकर 'रामायण' को उसकी भव्यता और पौराणिकता के अनुरूप बनाकर पेश करने का प्रयास करेंगे। 'रामायण' का पहला पार्ट 2026 में दिवाली के मौके पर और दूसरा पार्ट 2027 में दिवाली के मौके पर रिलीज हो सकता है। इसमें रणबीर कपूर भगवान राम के रोल में, यश रावण के रोल में, साई पल्लवी सीता के रोल में, सनी देओल भगवान हनुमान के रोल में और रवि दुबे लक्ष्मण के रोल में नजर आएंगे।

दृष्टिकोण

❐ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

...ताकि ये धरती बची रहे

धारावाहिक 'भारत एक खोज' में वसंत देव का लिखा गीत- सृष्टि से पहले सत्य नहीं था, असत्य भी नहीं, अंतरिक्ष भी नहीं, आकाश भीं नहीं था, छिपा था क्या कहां, किसने देखा था। ओर्बन वालेस की फिल्म 'अवर लैंड' देखते यह गाना बार- बार याद आता है।जब राजाओं का साम्राज्य नहीं बना था उससे पहले भी तो धरती, पेड़, नदी, पहाड़ थे। फिर इंसानों ने घर बना लिए और राज्य हो गए। उनका दिल चाहा तो किसी को शहर- इलाका दे दिया और ऐसा करते-करते इस धरती के कई हिस्से हो गए। इंग्लैंड में ऐसे इलाके हैं, जहां राजा-महाराजाओं की परंपरा जारी है और यह फिल्म उन जगह पर जाने की हिम्मत करती है, जहां पहले कम लोग गए हैं। सही समय पर सवाल है कि इंग्लैंड के देहात में घूमने का अधिकार किसे है !

पेड़-पौधों और जंगलों से भरी और खूबसूरत जगहं है इंग्लैंड। ज्यादातर हिस्सा आम के लिए बंद है। इंग्लैंड की 92 फीसद जमीन और 97 फीसद नदियां कानूनी तौर पर इस्तेमाल नहीं की जा सकतीं। यह सदियों की विरासत और परंपरा से है, जहां कई पीढ़ियों से परिवार कब्जा करते और देखभाल करते आए हैं।'अवर लैंड', 'राइट टू रोम' यानी घूमने के अधिकार आंदोलन में ले जाती है, क्योंकि यह बड़े पैमाने पर घुसपैठ, कैंपेन और शिक्षा के रास्ते पर चलती है, साथ ही जमीन मालिकों की पर्यावरण सुरक्षा और इस तरह की बड़ी पहुंच से पहले से ही खतरे में पड़े लैंडस्केप खतरे को भी दिखाती है।

फिल्म उन पर रोशनी डालती है जो उस हक के लिए लड़ रहे हैं, जो हर इंसान को धरती पर पैदा होने के साथ ही मिल जाता है, जिसमें राइट टू रोम कैंपेनर नादिया शेख भी शामिल हैं। यह फिल्म अश्वेत लोगों के लिए गांव से

जुड़ने में आने वाली रुकावटों को भी सामने लाती है, जिसमें ऐसे ग्रुप दिखाए गए हैं जो ग्लोबल मेजारिटी और रिफ्यूजी कम्युनिटी के लिए प्रकृति तक पहुंच को बढ़ावा देते हैं। जमीन के मालिकों और पैदल की सोच से पता चलता है कि जमीन के मालिकाना हक से जुड़े दुनिया भर में जरूरी सवाल कैसे सत्ता के इतिहास से जुड़े हैं। प्रकृति किसकी है और जमीन को सही मायने में शेयर करने का क्या मतलब है, इस पर लड़ाई है। 'राइट टू रोम' 2021 से गांव के कुछ बड़े इलाकों में शांति से बिना इजाजत घुसने का इंतज़ाम कर रहा है, जहां अभी जाने की इजाजत इज नहीं है।

इस कैंपेन को चलाने वालों का कहना है कि जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते हैं, स्कॉटलैंड के अधिकार को फॉलो करते हैं, जिसमें फसलों और प्रकृति का सम्मान किया जाता है। साथ ही हम प्राकृतिक दुनिया की गहरी देखभाल की कोशिश करते हैं। ऐसे भविष्य के गांव, जहां लोग न केवल प्रकृति के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक फायदों का आनंद लें, बल्कि रखवाले के तौर पर भी काम करें।

यह ग्रुप मानता है कि प्रकृति तक पहुंच हमारी शारीरिक और मानसिक सेहत के लिए जरूरी है। प्राकृतिक दुनिया से जुड़े बिना परवाह नहीं करते हैं और इसकी हिफाजत के लिए काम नहीं कर पाते हैं। फिर भी हम अपने आसपास की कई चीजों से बाहर है। हमारा फुटपाथ नेटवर्क शानदार है लेकिन ठीक से नहीं फैला और काफी नहीं है, जिससे आने- जाने का हक़ तो मिलता है, लेकिन वहां रहने का हक़ नहीं है, सिर्फ गुजरने का हक है।

ऊंचे लोग... ऊंची पसंद !

बाखबर

प्रकाश पुरोहित

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

नामीरों की उस टाउनशिप में दो तरह की लिफ्ट हैं, मालिकों यानी साहब के लिए और दूसरी सामान और नौकरों के लिए। साहब वाली लिफ्ट में भले ही साहब अकेले हों, लेकिन नौकर उनके साथ नहीं आ-जा सकते। साहब के कुत्ते जा सकते हैं साहब की लिफ्ट में, लेकिन नौकर नहीं जा सकते। नौकरों के लिए दूसरी लिफ्ट होती है। यह कोविड या कोरोना-काल की बात नहीं है, ना ही किसी वायरल बुखार का सीजन है, हर समय यह नियम लागू रहता है। नौकरों से पहले ही दिन कह दिया जाता है कि सर्विस लिफ्ट का ही उपयोग करें, इंसानों की लिफ्ट में नहीं चढ़ें। यदि किसी को नियम तोड़ते पाया गया तो उसकी नौकरी तो जाएगी ही, यहां किसी घर में काम भी नहीं कर पाएगा/पाएगी।

टाउनशिप के कर्ताधर्ता का मानना है कि ये लोग साफ-सफाई से नहीं रहते हैं (जबकि हर फ्लैट की साफ-सफाई इनके ही भरोसे रहती है) और साहब वाली लिफ्ट को गंदा करते हैं, स्क्रेच मार देते हैं और सबसे बड़ी बात, नौकर और साहब, एक साथ, एक ही लिफ्ट में यदि आने-जाने लगें तो फिर दोनों में फर्क ही क्या रह जाएगा! अगर ये अलग-अलग लिफ्ट ना हों तो बड़े और छोटे लोग में फर्क ही क्या रह जाए! यानी साहब लोग मानते हैं कि ये साथ खड़े रहेंगे तो कोई इन्हें भी साहब तो नहीं समझने लगेगा। फिर हमारी फैमिली भी तो आती-जाती है, उनकी हिफाजत का भी तो ध्यान रखना होता है, इन नौकरों का क्या भरोसा, लिफ्ट में कुछ भी हरकत कर सकते हैं। बात यह भी है कि मालिकों की लिफ्ट में बड़ा-सा आइना होता है, ठंडक रहती है और लिफ्ट की समय-समय पर रंगाई-पुताई भी होती रहती है, जबकि नौकरों की लिफ्ट किसी कैदखाने की तरह होती है, जिसमें ढंग की रोशनी भी नहीं होती है और कचरा-धूल जमी रहती है कि नौकर और घर भर का सामान इसी से लाया और ले जाया जाता है। अगर मालिक का सामान चढ़ाया या उतारा जा रहा है तो नौकरों को उतने समय इंतजार करना होता है, फिर साहब वाली लिफ्ट भले ही खाली खड़ी रहे। बाहर से आने वाले यह नियम नहीं जानते और यदि साथ खड़े नौकर को लिफ्ट में आने का कह भी दें तो ये हाथ जोड़ लेते हैं कि खबर हो गई तो जुर्माना लग जाएगा!

यहां रहने वालों का समय बहुत ही कीमती होता है, इसलिए हर नौकर का समय तय रहता है। चौथी मंजिल के पांचवें फ्लैट में जो परिवार रहता है, उसे आठ बजे नाश्ता चाहिए। उसी समय नौकरों की आवाजाही बढ़ जाती है और बाहर से आने वाले भी बढ़ जाते हैं। रात भर से खड़ा ट्रक सामान उतारने लगता है यानी यह नौकरों वाली लिफ्ट खाली नहीं रहती है और हर बार, अगली बार का इंतजार करना होता है कि सभी को हाजिरी लगानी है। इस बारे में कोई सुनने को तैयार नहीं होता है कि लिफ्ट खाली नहीं थी कि पांचवीं मंजिल वालों का सामान ट्रक में लादा जा रहा है।

देर होने पर डांट तो पड़नी ही है, लेकिन कोई यह नहीं कहता कि हमारी लिफ्ट से क्यों नहीं आ गई! क्योंकि यह तो इज्जत का सवाल है कि मालिक की लिफ्ट से नौकर कैसे आ-जा सकता है। मजेदार बात यह है कि लिफ्ट में नहीं चढ़ने देते, लेकिन घर में हर जगह आ-जा सकते हैं नौकर, क्योंकि सफाई करवानी है तो मना भी कैसे करें। किचन में भी होती है और बेडरूम में भी, पूजा घर में भी दाखिला है और बैठक में भी। हर कमरे यानी चप्पे-चप्पे पर उनके हाथ और पैर लगते हैं, लेकिन लिफ्ट ही है, जो उन्हें याद दिलाती रहती है कि वे मालिक हैं और ये नौकर। कभी-कभी सोचता हूं, लिफ्ट का आविष्कार हुआ ही नहीं होता तो क्या नौकरों के लिए अलग से सीढ़ियां भी बनाई जातीं!

कुत्ता भले ही मालिक की लिफ्ट में पंजा मार दे... सूस... पोटी कर दे, चलेगा, मालिक, कुत्ते के साथ खड़े होने में किसी को उज्र नहीं है, बल्कि हो सकता है, उस

पर प्यार भी दिखा दें, पुचकार दें या उसकी नस्ल यानी खानदान के बारे में जानकारी बढ़ा लें या तारीफ ही कर दें कि कितना मासूम या भव्य है। फिर भले ही वह भौंकने लगे या गुर्राना शुरू कर दे। कुत्ते या बिल्ली से कोई गुरेज नहीं, परहेज नहीं, मालिकों के बच्चे भले ही चित्रकारी का अभ्यास लिफ्ट की दीवारों पर कर लें, तारीफ ही होगी, कोई शिकायत नहीं होगी।

मालिकों का अहम इसी में फलता-फूलता है कि कोई लिफ्ट के इंतजार में बैचेन हुआ जा रहा है और हम हैं कि खाली लिफ्ट में अकेले सफर कर रहे हैं। अपने यहां काम करने वाले को देख लें तो भी इनका दिल नहीं पसीजता कि कह दें च्आ जा हमारे साथ !ज् फिर यदि वह दस मिनट देरी से आए तो पैसे काटने से भी बाज नहीं आएं। लिफ्ट खाली नहीं थी तो यह हमारी समस्या थोड़े ही है, सीढ़ियां चढ़ कर आना चाहिए।

वैसे पिछले दिनों मेंटनेंस के चक्कर में लिफ्ट बंद हो गई थी तो नौकरों के लिए अलग से सीढ़ियां नहीं थीं। तब मालिक उतर रहे थे और नौकर चढ़ रहे थे। किसी शापिंग मॉल में यदि नौकर और मालिक एक ही लिफ्ट का इंतजार करते खड़े हों तो ऐसे में क्या होता होगा, क्या साहब लोग तब लिफ्ट छोड़ देते होंगे कि नौकर के साथ क्या जाना, फिर भले ही सिनेमा की शुरुआत ही क्यों छूट जाए, होता होगा ऐसा ही, क्या पता। आदत तो आदत है, क्यों बिगाड़ना!

विश्व मातृत्व दिवसः लालन-पालन करने वाली माँ का गौरव दिवस

...और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

निःसंदेह आप चौंक गये होंगे कि 'मदर्स डे' मातृ दिवस जो मई माह के दूसरे रविवार को संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा घोषित तारीख है, को मनाया जाता है इस दिन हम अपनी माँ को फूल या उनका कोई पसंदीदा कार्य करके, उन्हें सम्मानित करके उन्हें धन्यवाद करते हैं। फिर ये 'मातृत्व दिवस' क्या है जो हम 11 अप्रैल को मनाने जा रहे हैं।

मातृत्व दिवस विशेष तौर पर उन मातृत्व व्यक्तित्वों के प्रति आभार व्यक्त करने का दिन है। अर्थात् वो बच्चे जिनके जीवन में माँ के समान कोई व्यक्तित्व है जो उन्हें अपना बच्चा समझ के देखभाल करता है वो मातृत्व दिवस की श्रेणी में आता है। भारत में सबसे सरल भाषा में यूँ समझ सकते हैं देवकी ने 'कृष्ण' को जन्म तो दिया अर्थात् वो उनकी पैदा करने वाली माता हुई परन्तु उनका पालन पोषण यशोदा ने माता की भांति किया जो मातृत्व भाव कहा जाता है। ऐसा नहीं कि वे उनकी माँ नहीं हैं, 'माँ स्वरूप हैं' पर कृष्ण ने सब जानते हुये भी उन्हें माता के स्थान पर रखा यही 'मातृत्व दिवस' के रूप में हुआ।

जब मुझे ये ज्ञात हुआ मैं अभिभूत हो गई आज तक इतना अच्छा विचार हमें पता नहीं था कितने व्यक्ति, स्त्रियाँ हमारे जीवन में मातृ स्वरूप भूमिका निभाते हैं पर हम सिर्फ पैदा करने वाली माता के ही कृतज्ञ होते हैं। इसमें दो परिस्थितियाँ हो सकती हैं। एक उन बालकों के लिये जिनकी माता पहले से है पर उन्हें माता जैसा स्नेह दूसरी स्त्री से भी मिल रहा है। दूसरा वो बालक जिनकी माता नहीं है जिन्हें हम 'अनाथ' कहते हैं या माता तो है पर वो उन्हें आश्रम में छोड़ कहीं गायब हो गई तो ऐसे बच्चे जो गोद ले लिये जाते हैं या जिन्हें किसी और स्त्री द्वारा माता सा स्नेह प्राप्त होता है वो स्त्रियाँ ''मातृत्व दिवस'' मनाने की श्रेणी में आती हैं। मुझे भी गौरवान्वित महसूस होता है जब कुछ बालक मुझे इस श्रेणी में रखते हैं। मेरे यहाँ काम करने वाली रेखा के पास जन्म से इक बालक है क्योंकि उसके अपने बच्चे नहीं थे और बालक की देखभाल करने वाला कोई ना था। उसे अस्पताल में छोड़ा जाने वाला था उसने उसे बच्चे जैसा पाला नहीं कहूँगी, बल्कि वो उसका ही बच्चा हुआ आंख खुलते ही उसके पास माता का कोई विकल्प नहीं था। मेरी अपनी एक रिश्तेदार जिन्हें बच्चा होने की संभावना नहीं थी उन्होंने बाकायदा ऐसी जगह से बच्चे के लिये गुहार की जहाँ किसी कारणवश, बच्चे छोड़ दिये जाते थे और सबसे

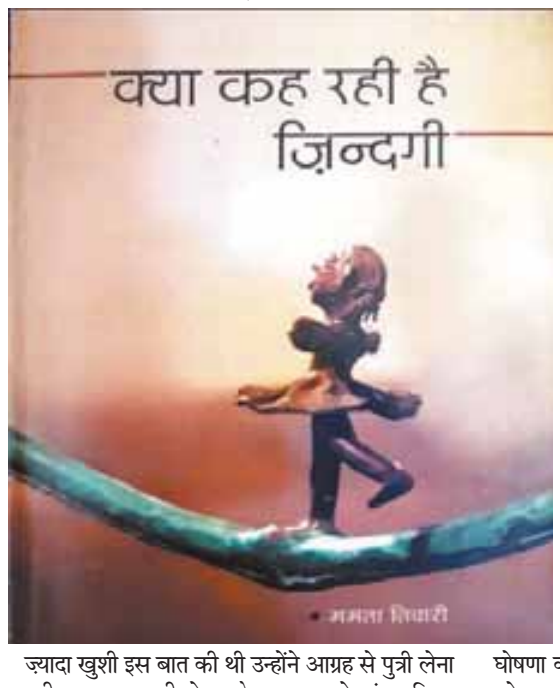

ज़्यादा खुशी इस बात की थी उन्होंने आग्रह से पुत्री लेना स्वीकारा, उस पुत्री ने उनके मातृत्व को संतुष्ट किया और ऐसी माँओं के लिये भी तो आभार का इक दिन बनता है। कानून भी ऐसी माताओं का सम्मान करता है जो गोद लिये बच्चे पाल रही हैं कानून ने उनके लिये कोई भेदभाव नहीं किया।

(1) ऐसी महिलाओं को बच्चे की उम्र की शर्त के बिना 12 हफ्ते की 'पेड लीव' मिलेगी।

(2) कोर्ट ने स्पष्ट किया कि बच्चा गोद लेना और उसे जन्म देना दोनों ही मामलों में माँ का दर्जा बराबर है और सामाजिक सुरक्षा के तहत उन्हें समान लाभ मिलना चाहिये।

(3) यद्यपि औपचारिक 'गोद लेने वाली माँ' दिवस नहीं है फिर भी आजकल 'बर्थ मदर्स डे' के माध्यम से गोद लेने की प्रक्रिया में शामिल स्वीकार किया जाता है।

'जन्मदाता माता दिवस÷ इक ऐसा दिवस है जिन्होंने अपने बच्चे को गोद देने का निर्णय लिया है। ऐसे ही अभिनेत्री रवीना टंडन, सुष्मिता सेन ने अपने करियर के चरम पर जब वे विवाहित नहीं थीं दो-दो पुत्रियों का दायित्व बखूबी निभाया तो क्या बच्चा पैदा करने वाली माँ ही सम्मान की पात्र है बल्कि ऐसी माताएं ज़्यादा सम्मान की हक़दार हैं जो दूसरों के बच्चों को असली माँ से भी ज़्यादा स्नेह दे रही हैं तो इनके सम्मान में इक दिवस तो बनता है और हम सभी स्त्रियों को विशेष रूप से ऐसी माँओं को आदर देना चाहिये। वैसे तो 9 नवम्बर को 'विश्व दत्तक ग्रहण दिवस' (वर्ल्ड एडॉप्शन डे) मनाया जाता है परन्तु 11 अप्रैल मातृत्व दिवस की अभी ज़्यादा चर्चा नहीं है। ये शायद इसलिये भी होता है कि बच्चा गोद लेने की गोपनीयता बनाये रखने के कारण ऐसे माता-पिता आगे नहीं आते परंतु अगर आप स्वस्थ मानसिकता के बारे में सोचें कि बालक को पता होना चाहिये आप जो उसे स्नेह दे रही आपने उसे जन्म नहीं दिया मेरे ख़्याल से ऐसे बच्चे ऐसी माँ को भरपूर सम्मान देंगे और यही उनके मातृत्व को सार्थक बनायेगा।

'व्हाइट रिबन एलायंस' ने 11 अप्रैल को राष्ट्रीय सुरक्षित मातृत्व दिवस मनाने की घोषणा की है। इस 'मातृत्व दिवस' को मनाने का एक उद्देश्य यह भी रहा कि महिलाओं को उनके प्रसव (जिसमें भारत में प्रसूति में मृत्यु दर बहुत है) में सुरक्षा जागरूकता दी जाये उनका मातृत्व सुरक्षित रहे। भारत सरकार ने 11 अप्रैल को राष्ट्रीय सुरक्षित मातृत्व दिवस के रूप में मान्यता दी इस दिन कस्तुरबा गांधी का जन्म दिन मनाया जाता है।

तो कुल मिलाकर समाज का कर्तव्य है कि स्त्री को गर्भावस्था व प्रसूति के समय संपूर्ण सुरक्षा मिले, जन्म ना देने वाली माताओं को गौरवशाली सम्मान मिले।